



प्रोफेसरों के
सॉनेट्स
का
हिन्दी पद्यानुवाद

संस्करण

मोती बी.ए.



शेक्सपियर के सॉनेट्स का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



शेक्सपियर के सॉनेट्स का हिन्दी पद्यानुवाद

मोती बी.ए.





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



प्रकाशक

सम्पदा न्यूज

©श्री मोतीलाल वेल्लेयर सेवा ट्रस्ट, बरहज

देवरिया, (उ.प्र.)

द्वितीय संस्करण-2021



Website-

www.sampadanews24.blogspot.com

Social Media-

www.facebook.com/sampadanews

www.facebook.com/radiomoti

www.facebook.com/anjaniupadhyay

www.pinterest.com/sampadanews

www.linkedin.com/anjaniupadhyay

www.twitter.com/anjaniypadhyay

www.koo.com/sampadanews

Mo-8299015136

E-mail

anjanikumarupadhyaya@gmail.com

editorsampadanews@gmail.com

अंजनी कुमार उपाध्याय द्वारा सम्पदा के वेबसाईट पर जारी





दो शब्द

शेक्सपियर की इस अमर कृति की ओर हमारे विद्यालय के अंग्रेजी विभाग के प्रवक्ता श्री रामनरेश पाण्डेय ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया और आग्रहपूर्वक यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि मैं 'सॉनेट्स' का स्वपान्तरण हिन्दी में कर डालूँ। उन्होंने मेरा उत्साहवर्धन किया और प्रत्येक सॉनेट की हिन्दी स्वरूप पर अपनी स्वीकृतिसूचक मुहर लगा दी। विद्यालय के अन्यान्य सहयोगियों ने मुक्त कण्ठ से इस कार्य की सराहना की। हमारे विद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रवक्ता धर्माचार्य पण्डित महेन्द्र शास्त्री ने इसके प्रकाशन की व्यवस्था दी। अग्रिम ग्राहक के रूप में हजार हाथों ने इस योजना कार्यान्वित किया। प्रिण्ट क्राफ्ट प्रेस के अधिष्ठाता श्री विश्वनाथ सिंह की तत्परता से कृपालु पाठकों के समक्ष शेक्सपियर भारतीय परिधान में खड़ा मुस्करा रहा है। मैं इन समस्त प्रेरक शक्तियों का कृतज्ञ हूँ।

शेक्सपियर के कुल 154 सॉनेट्स में 109 इस पुस्तक में अनूदित हैं। अनुवाद नीरस एवं कठोर कार्य है। इस कार्य में सरसता और सहजता का सर्वथा अभाव रहता है। अलंकार और परिधान यदि न उतर पायें तो न सही, भावहत्या न होनेपाये और जीवन का तत्त्व शेष रह जाये, यही ध्यान विशेष रखा गया है। अपूर्णताओं का भागी मैं यही सोचकर सन्तुष्ट हूँ कि यदि शेक्सपियर की भावना का कोई भी अंश सहृदय पाठकों को छू सका तो यह परिश्रम सफल है।

जुलाई 1966

-मोती बी.ए.





शेक्सपियर के सॉनेट्स का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



श्री रामनरेश पाण्डेय को प्रस्तुत सॉनेट समर्पित है,
जिनकी प्रेरणा से शेक्सपियर के सॉनेट्स का
हिन्दी पद्यमय रूपान्तर कर सका

प्रशंसा ने तुम्हारी हे सखे, उलझा दिया मुझको
भटकता रूप के पीछे कहाँ से मैं कहाँ आया
दमकता भाल विषधर ब्याल धेरे है खड़े जिसको
सुनहरी ज्योति लख प्रिय की हृदय का प्यार ललचाया
स्वयं का ज्ञान भूला, खो गया मैं आप अपनापन
युगों की प्यास जागी, ज्योति का मधुपान मन वांछित
मृदुल विद्युत किरण सन्सर्पश से रोमांचयुत तन-मन
हुआ तादात्म्य, विषधर ब्याल भी तत्क्षण हुवे प्रमुदित
सहज ही रूप की आराधना का दिव्य सुख पाऊँ
तुम्हारे प्रति सखे, अनुराग मेरे प्राण में जागा
मुझे दो प्रेरणा, नभ से सितारे तोड़ कर लाऊँ
तुम्हें सब श्रेय, पाये विश्व अपना प्रेय मुँह माँगा
नये परिधान में 'सॉनेट' हुवे अवतरित अनजाने
कुछ 'शेक्सपीयर' और 'रामनरेश' कुछ जाने ।

12.01.66 बरहज

मोती बी.ए.





शेक्सपियर को समर्पण

घटाकर दीप की बाती नेवत लाया अँधेरो को
चढ़ा दो द्वार की साँकल पड़ा विश्राम करता जब
हुई थी रात पथ में ही न पहुँचा जो बसेरे को
सुपरिचित मान उसने द्वार मेरा खटखटाया तब
हुए अबएक से हम दो, मिटी एकान्तता मन की
अँधेरा मित्र सकुचाया रहा जो पूर्व आमंत्रित
हँसी कुछ दीप की बाती, बड़ी कुछ बात जीवन की
नवागन्तुक सुहृद के स्नेह में आतिथ्य सम्मानित
हृदय में देख व्रण मेरे, दिखाये दाग सब उसने
जहाँ जैसे मिले उसको, जहाँ रोया, जहाँ गाया
न जाने भीर में ही कब लगा वह राह पर अपने
उसे अब ढूँढता दिन में जिसे था रात में पाया

समर्पित शेक्सपियर दोस्त को उसकी कहानी है
मुझे अब याद उसकी बात वह सारी जबानी है ।

मोती बी.ए.





शेक्सपियर के सानेट्स का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



आभार

श्री मोती बी.ए ने अपनी पुस्तक 'शेक्सपियर के सानेट्स का हिन्दी पद्यानुवाद' का प्रथम प्रकाशन प्रिन्ट क्राफ्ट, माया बाजार गोरखपुर' द्वारा कराया था। बड़ी ही मोहक छवि थी पुस्तक की। पुस्तक ने अप्रतिम उपलब्धियां और सम्मान जन मानस में प्राप्त किया। उसके बाद इसका दूसरा संस्करण प्रकाशित नहीं हुआ। पुस्तकों के प्रकाशन में साहित्यकार डा. रामदेव शुक्ल द्वारा श्री मोती बी.ए ग्रन्थावली के 8 वें खण्ड में 'शेक्सपियर के सानेट्स का हिन्दी पद्यानुवाद' का पुनः प्रकाशन किया गया था। मूल 'शेक्सपियर के सानेट्स का हिन्दी पद्यानुवाद' के कवर चित्र को उसमें सम्मिलित नहीं किया। शायद उस चित्र में श्री मोती बी.ए की भावना छपी हुयी थी।

मुझे मूल रूप से पुस्तक 'शेक्सपियर के सानेट्स का हिन्दी पद्यानुवाद' मस्तिष्क को झकझोरती रहती थी। मैंने यह तय किया कि श्री मोती बी.ए की सभी पुस्तकें मूल रूप में नेट पर उपलब्ध करा दी जाय। इसके लिए ईश्वर ने कुछ लोगों के द्वारा प्रेरणाश्रोत और सहायक बनाकर मदद के लिए उतार दिया। आज ये पुस्तक 'श्री मोती लाल वेल्फेयर सेवा ट्रस्ट' द्वारा सम्पदा न्यूज चैनल के वेबसाइट www.sampadanews24.blogspot.com के **important books of motiba** नामक आप्सन पर उपलब्ध कराया जा रहा है।

'शेक्सपियर के सानेट्स का हिन्दी पद्यानुवाद' को मैंने मूल रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जिसमें उसके कवर पृष्ठ को मूल रूप में (परिवर्तित रूप में कम्प्यूटराइज्ड कृत प्रस्तुत है।)

श्री मोती बी.ए ने बाद में सैकड़ों कविताएं लिखी। वो अन्तिम समय तक लिखते रहे। लेखन से उनका साथ कभी नहीं छूटा। अन्तिम समय में उन्होंने अपने लेखन में सहायता भी लेने लगे। उनके प्रत्येक रचना को लिखने का काम पैजनी उपाध्याय 'लूना' और माण्डवी उपाध्याय 'पूना' ने पूरा किया। अब आज 'लूना' जिसका नाम पैजनी पाण्डेय पत्नी रजनीश पाण्डेय एक वीरांगना के रूप में बालक केजान बचाने में शहीद हो गयी। 'पूना' माण्डवी द्विवेदी पत्नी सत्येन्द्र द्विवेदी आज अपने सतकर्मों और श्री मोती बी.ए के आशीर्वाद से सुखी है। इस कार्य के सम्पादन में स्व. लूना की विशेष योगदान रहा है जो आज दैवीय शक्ति के रूप में साथ है। पूना का भी इस कार्य में सहयोग और प्रेरणा रहता है।

इसके अतिरिक्त वेबसाइट के स्थायित्व के लिए हम उमाशंकर सिंह विसेन उर्फ





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



उमेश सिंह, जिलाध्यक्ष, चेयरमैन संघ देवरिया, अध्यक्ष नगर पालिका परिषद गौरा बरहज, का आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त स्व. हंसनाथ सिंह, जीतेन्द्र भारत, का सहयोग रहा है।

ट्रस्ट के निर्माण में राकेश श्रीवास्तव सम्पादक सम्पदा, सूर्यनाथ सिंह, शिमान्ती देवी पत्नी सूर्यनाथ सिंह, बी.के. सर, मीनी उपाध्याय, वर्तिका उपाध्याय का योगदान सर्वोपरि है।

इन सभी साधनों के अनुकूल होने पर हम आभारी हैं उन लोगों के जिनके सहयोग से यह पुस्तकें आज उपलब्ध होने के लिए तैयार हैं। इसमें सम्पदा परिवार देवेन्द्र द्विवेदी, रामबिलास प्रजापति, सत्य प्रकाश पाण्डेय, राकेश श्रीवास्तव, मोनिका त्यागी राणा, के साथ विशेष सहायक मु० एहसान के तीन पुत्र रत्न फैजान, जिशान, अयान, का सहयोग सर्वोपरि है जिन्होंने अपने अथक प्रयास से इस कार्य को सफल अंजाम देने में पूर्ण सहायता की है।

अन्त में हम अपने प्रेरणाश्रोत और अपने स्नेह से ऊर्जा प्राप्त कर और आशीर्वाद से अपने लेखन से मार्गदर्शन करने वाले प्रो.अजय कुमार मिश्र, प्राचार्य, बाबा राघवदास भगवानदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आश्रम बरहज का आभारी हूँ जिनके सहयोग से आत्मबल बना रहा। साथ ही हमारे बड़े भाई भालचंद्र उपाध्याय, जवाहरलाल उपाध्याय, शान्ति उपाध्याय, प्रमिला उपाध्याय, गुंजन उपाध्याय इत्यादि घर के सदस्य एवं श्री मोती बी.ए. के शुभचिन्तकों का विशेष आभारी हूँ जिन्होंने इस नेक कार्य में जहां तक हो सके मेरी सहायता की है।

अंजनी उपाध्याय

पुत्र-श्री मोती बीए

सम्पादक-सम्पदा न्यूज चैनल

प्रबन्धक-श्री मोतीलाल वेल्फेयर सेवा ट्रस्ट

उपाध्यक्ष-मोती बीए वेल्फेयर सोसाइटी

लक्ष्मी निवास,

श्री मोती बीए मार्ग, नन्दना वार्ड पश्चिमी

बरहज, देवरिया

उ.प्र.

E-mail

anjanikumarupadhyaya@gmail.com

editorsampadanews@gmail.com

Website- www.sampadanews24.blogspot.com

01.08.2021





CONTENTS

Sr. No	Sonnet Title	Sonnet No.
01.	From fairest creatures	I
02.	When forty winters	II
03.	Look in thy glass	III
04.	Unthrifty loveliness	IV
05.	Those hours	V
06.	Then let not	VI
07.	Lo ! in the orient	VII
08.	Music to hear	VIII
09.	Is it for fear	IX
10.	For shame ! Deny	X
11.	As fast as thou shalt wane	XI
12.	When I do count	XII
13.	O, that you were your self	XIII
14.	Not from the stars	XIV
15.	When I consider	XV
16.	But wherefore do not you	XVI
17.	Who will believe	XVII
18.	Shall I compare thee	XVIII
19.	Devouring Time	XIX
20.	A woman's face	XX
21.	So, is it not with me	XXI
22.	My glass shall not	XXII
23.	As an unperfect actor	XXIII
24.	Mine eye hath play'd	XXIV
25.	Let those who are in favour	XXV
26.	Lord of my love	XXVI
27.	Weary with toil	XXVII
28.	How can I then return	XXVIII
29.	When, in disgrace	XXIX
30.	When to the sessions	XXX
31.	Thy bosom is endeared	XXXI
32.	If thou survive	XXXII
33.	Full many a glorious morning	XXXIII
34.	Why didst thou promise	XXXIV





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



35.	No more be grieved	XXXV
36.	Let me confess	XXXVI
37.	As a decrepit father	XXXVII
38.	How can my Muse	XXXVIII
39.	O, how thy worth	XXXIX
40.	Take all my loves	XL
41.	That thou hast her	XLII
42.	When most I wink	XLIII
43.	Mine eye and heart	XLVI
44.	Betwixt mine eye and heart	XLVII
45.	How careful was I	XLVIII
46.	How heavy do I journey	L
47.	Thus can my love excuse	LI
48.	So am I as the rich	LII
49.	What is your substance	LIII
50.	O, how much more	LIV
51.	Nor marble nor	LV
52.	Sweet love renew	LVI
53.	Being your slave	LVII
54.	That God forbid	LVIII
55.	If there be nothing new	LIX
56.	Like as the waves	LX
57.	Is it thy will	LXI
58.	Sin of self love	LXII
59.	Against my love	LXIII
60.	When I have seen	LXIV
61.	Since, brass nor stone	LXV
62.	Tired with all these	LXVI
63.	No longer mourn	LXXI
64.	O, lest the world should	LXXII
65.	That time of year	LXXIII
66.	But be contented	LXXIV
67.	So are you to my thought	LXXV
68.	Why is my verse so barren	LXXVI
69.	So oft have I invoked	LXXVIII
70.	Whilst I alone did call	LXXIX





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



71.	O, how I faint	LXXX
72.	Or, I shall live your epitaph	LXXXI
73.	I grant thou wert not	LXXXII
74.	Say that thou didst forsake	LXXXIX
75.	Then hate me	XC
76.	Some glory in their birth	XCI
77.	But do thy worst	XCH
78.	So shall I live	XCHH
79.	They that have power	XCIV
80.	How sweet and lovely	XCV
81.	Some say thy fault is youth	XCVI
82.	How like a winter	XCVH
83.	From you have I been absent	XCVIII
84.	The forward violet	XCIX
85.	Where art thou Muse	C
86.	O truant Muse	CI
87.	My love is strength'd	CH
88.	To me, fair friend	CIV
89.	Let not my love	CV
90.	When in the chronical	CVI
91.	What's in 'the brain	CVIII
92.	O never say that	CIX
93.	Alas it's true	CX
94.	O, for my sake	CXI
95.	Your love and pity	CXII
96.	Since I left you	CXIII
97.	Let me not to the marriage	CXVI
98.	What potions have I drunk	CXIX
99.	'Tis better to be vile	CXXI
100.	No, Time thou shalt not boast	CXXIII
101.	If my dear love	CXXIV
102.	How, oft when	CXXVIII
103.	Thou art as tyrannous	CXXXI
104.	When my love swears	CXXXVIII
105.	O, call not me to justify	CXXIX
106.	My love is as a fever	CXLVII
107.	O me, what eyes hath love	CXLVIII
108.	Const thou, O cruel ! say	CXLIX
109.	The little Love-God	CLIV





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-I

From fairest creatures

From fairest creatures we desire increase,
That thereby beauty's rose might never die,
But as the ripper should by time decease,
His tender heir might bear his memory:
But thou contracted to thine own bright eyes,
Feed'st thy light's flame with self-substantial fuel,
Making a famine where abundance lies,
Thy self thy foe, to thy sweet self too cruel:
Thou that art now the world's fresh ornament,
And only herald to the gaudy spring,
Within thine own bud buriest thy content,
And, tender churl, mak'st waste in niggarding:
Pity the world, or else this glutton be,
To eat the world's due, by the grave and thee.

हमारी कामना-सौन्दर्य का संसार विकसित हो
कहीं सौन्दर्य का यह पुष्प मुरझाने नहीं पावे,
कभी परिपक्व होकर किन्तु यदि वह काल-कवलित हो
सुकुसुमल पीढ़ियों के ध्यान में वह रंग छा जाये,
इधर तुम हो कि अपने ही दृगों की ज्योति में खोयी
लगा निज रूप की समिधा हवन का कुण्ड भरती हो,
प्रचुरता हो जहाँ इतनी वहीं दुष्काल-सा कोई
स्वयं के शत्रु, अपनी ही मृदुलता नष्ट करती हो !
तुम्हीं जब विश्व के हो जगमगाते दिव्य आभूषण
रंगीले मधु वसन्तों के सरस सन्देशवाहक जब,
स्वयं की ही कली में क्यों दफन करती स्वयं का धन
अरी नादान ! ओ भोली ! कृपणता ले मरेगी सब,

रहम खाओ जमाने पर, नहीं यह दृष्ट जायेगा
अदा तुमसे, तुम्हारी कद्र से हक हो न पायेगा ।

Sonnet-II

When forty winters

When forty winters shall besiege thy brow,
And dig deep trenches in thy beauty's field,
Thy youth's proud livery so gazed on now,
Will be a totter'd weed of small worth held:
Then being asked, where all thy beauty lies,
Where all the treasure of thy lusty days;
To say, within thine own deep sunken eyes,
Were an all-eating shame, and thriftless praise.
How much more praise deserv'd thy beauty's use,
If thou couldst answer 'This fair child of mine
Shall sum my count, and make my old excuse,'
Proving his beauty by succession thine!
This were to be new made when thou art old,
And see thy blood warm when thou feel'st it cold.

तुम्हारी उम्र ने चालीस ऋतुएँ शीत की पालीं
तुम्हारे क्षेत्र में सौन्दर्य के गहरी खुदी खाई,
जवानी के रंगीले दिन कि जिनपर सब नजर डाले
विकृत होकर मलिन होंगे पड़ी रह जाय ज्यों काई
जमाना पृष्ठ बैठे रूप के जादू कहाँ तैरे ?
किधर की लद गये सारे खजाने उन बहारों के ?
बने गड़ढ़े धँसी-आँखें तुम्हारी जो रहीं, डेर
रसीली वाहवाही, बेवफाई के इशारों के
अहा ! इस रूप की उपयोगिता बढ़ जाय तब कितनी
अगर तू कह सके 'यह खूबसूरत शिशु हमारा है,
यही थाती, यही माफी हमारी गलतियों जितनी',
सहज अति सिद्ध, सुन्दर रूप का प्रतिनिधि तुम्हारा है,

बनोगी वृद्ध जब अभिजात प्यारा नौजवाँ होगा
प्रवाहित हो उठोगी, जब तुम्हारा स्रोत सूखेगा ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-III

Look in thy glass

Look in thy glass and tell the face thou viewest
Now is the time that face should form another;
Whose fresh repair if now thou not renewest,
Thou dost beguile the world, unbless some mother.
For where is she so fair whose unneared womb
Disdains the tillage of thy husbandry?
Or who is he so fond will be the tomb
Of his self-love, to stop posterity?
Thou art thy mother's glass and she in thee
Calls back the lovely April of her prime;
So thou through windows of thine age shalt see,
Despite of wrinkles, this thy golden time.
But if thou live, remembered not to be,
Die single and thine image dies with thee.

निहारो नेह से दरपन, बताओ रूप जो देखा
रहेगी अब न यह सूरत जमाना आ गया है वह,
सम्हालेगा कहो तब कौन जब तुमसे न सम्हालेगा
बिना माता बने भ्रम में भला कब तक सकोगी रह ?
कहो, वह सुन्दरी कैसी न जिसमें कोमल की गरिमा
कभी सम्पर्क स्वामी से नहीं जो चाहती अपना,
पुरुष भी कौन ऐसा मूलकर सन्तान की सुधमा
लिये जो कद्र धूमे, और पाले प्यार का सपना ?
स्वयं तुम खूबसूरत आइना माँ के सिंगारों का
जवानी फूल-सी अपनी निहारे प्यार से जिसमें,
झरोखे से उमर के झाँक मुँह देखो बहारों का
जवानी में मिलेगी झुर्रियाँ हँसती हुई इसमें

न दुनिया नाम ले यदि चाहती हो जिन्दगी ऐसी
मरो एकान्त जीवन में, मरेगी साथ छाया भी ।

Sonnet-IV

Unthrifty loveliness

Unthrifty loveliness, why dost thou spend
Upon thy self thy beauty's legacy?
Nature's bequest gives nothing, but doth lend,
And being frank she lends to those are free:
Then, beauteous niggard, why dost thou abuse
The bounteous largess given thee to give?
Profitless usurer, why dost thou use
So great a sum of sums, yet canst not live?
For having traffic with thy self alone,
Thou of thy self thy sweet self dost deceive:
Then how when nature calls thee to be gone,
What acceptable audit canst thou leave?
Thy unused beauty must be tombed with thee,
Which, used, lives th' executor to be.

सहज रमणीय सुन्दरते ! स्वयं पर क्यों लुटाती हो
मिली जो रूप की पूँजी, अनागत पीढ़ियों की है,
नहीं अधिकार उस धन पर प्रकृति ने कृण दिया तुमको,
प्रकृति में छल नहीं, इस हेतु होकर मुक्त देती है,
कृपण की भाँति सुन्दरते ! असद् उपयोग करती क्यों ?
प्रकृति ने बाँटने को मुक्त मन से धन लुटाया है,
न कुछ भी लाभ जिसमें क्यों उसी में खर्च करती यों
महत्तम राशि यह धन की, न आश्रय तक बनाया है !
अकेली हो सफर यह जिन्दगी का कर रही हो तुम
तुम्हीं से ही तुम्हारी ही मधुरता है दगा करती,
कहो, तब क्या करोगी तुम प्रकृति लेगी बुला जिस क्षण ?
निरीक्षक पूछ बैठे यदि, 'दिखाओ है कहाँ भरती' ?

दफन होगी तुम्हारे साथ ही नाकाम सुन्दरता
उतरती यदि प्रयोगों में, प्रचुक्ता भी बना रहता ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-V

Those hours

Those hours, that with gentle work did frame
The lovely gaze where every eye doth dwell,
Will play the tyrants to the very same
And that unfair which fairly doth excel;
For never-resting time leads summer on
To hideous winter, and confounds him there;
Sap checked with frost, and lusty leaves quite gone,
Beauty o'er-snowed and bareness every where:
Then were not summer's distillation left,
A liquid prisoner pent in walls of glass,
Beauty's effect with beauty were bereft,
Nor it, nor no remembrance what it was:
But flowers distilled, though they with winter meet,
Leese but their show; their substance still lives sweet.

प्रकृति ने ले सुखद आशा बनाया रूप अति सुन्दर
कि जिसपर आँख दुनिया की लगाये टकटकी रहती,
उसी अन्दाज से नज़रें उठाये आततायी पर
असुन्दर वस्तुओं से भी उसी सद्भाव से मिलती !
बढ़ा जाये समय बेचैन कर थामे बहारों का
भयानक शीत से, हिमपात से उसको मिला देता,
तुषारों में दबा सौन्दर्य, घर उजड़ा सिंगारों का
उड़े तरुपात चुपके से, प्रचुरताएँ गला देता !
बहारों के नजारों का अहो ! क्या सार रह जाये
रंग जो चित्र शीशों पर टंगे यदि चित्रशाला में ?
असर सौन्दर्य का उसमें कहो, किस भाँति आ पाये
स्वयं ऐसे, न स्मृति वैसी कहे जो गुण रहे उनमें,

बसाये फूल जब जाते, न हो मौसम सुहाना भी
न उनका रूप वह लेकिन, महँक उठता जमाना भी ।

Sonnet-VI

Then let not

Then let not winter's ragged hand deface,
In thee thy summer, ere thou be distilled:
Make sweet some vial; treasure thou some place
With beauty's treasure ere it be self-killed.
That use is not forbidden usury,
Which happies those that pay the willing loan;
That's for thy self to breed another thee,
Or ten times happier, be it ten for one;
Ten times thy self were happier than thou art,
If ten of thine ten times refigured thee:
Then what could death do if thou shouldst depart,
Leaving thee living in posterity?
Be not self-willed, for thou art much too fair
To be death's conquest and make worms thine heir.

तुषारों के निटुर जर्जर करों से मत बिखरने दो
बसन्ती रूप को अपने निखरने के प्रथम प्यारे,
बना लो इत्र शीशी का, भरो चाहे खजाने को
सुघर अनमोल निधियों से मिटें इसके प्रथम सारे,
मधुर उपयोग इसका है, न वह उपयोग जो वर्जित
बनाता है सुखी उनको खुशी से ऋण चुकावें जो,
तुम्हारे ही लिए तो वह करो अभिजात जो अर्जित
भले हों एक से दस, किन्तु सुख दसगुन बनायेंगे,
खुशी जितनी अभी है दस गुना बढ़ और जायेगी
दशम के दस अगर दस बार फिर आकार में आवें,
भरो चाहे, तुम्हारा मृत्यु अब कुछ कर न पावेगी
तुम्हारी पीढ़ियाँ जीवित अमर तुमको बना जायें,

करो मत, आह ! मनमानी कहीं इस रूप पर सुन्दर
न फहरे केतु यम का, कीट का हो वह न उत्सव घर।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-VII

Lo! in the orient

Lo! in the orient when the gracious light
Lifts up his burning head, each under eye
Doth homage to his new-appearing sight,
Serving with looks his sacred majesty;
And having climbed the steep-up heavenly hill,
Resembling strong youth in his middle age,
Yet mortal looks adore his beauty still,
Attending on his golden pilgrimage:
But when from highmost pitch, with weary car,
Like feeble age, he reeleth from the day,
The eyes, 'fore duteous, now converted are
From his low tract, and look another way:
So thou, thyself outgoing in thy noon
Unlooked on diest unless thou get a son.

दमकता भाल मुखमण्डल प्रकाशित ज्योति प्राची में
समुन्नत शीश, गौरवपूर्ण, सब संसार के प्राणी-
विधायें नेत्रा श्रद्धा से, विभा नूतन प्रभाती में
सुकृति के भूप की सेवा, पुलक परिपूर्ण अगवानी,
गगन उत्तुंग पर अभियान कर दिनमान आरोहित
लगे जैसे युवा कोई सबल तपता जवानी में,
उसी सौन्दर्य को अब भी जगत की भावना अर्पित
समस्थित ध्यान अनुचर भाँति है जिस दिव्यगामी में,
वही सर्वोच्च स्वर्गिक भृंग से जब हाँक जर्जर रथ
दुलकता गर्त में ज्यों वृद्ध जिसकी शक्ति सब खोयी,
वही श्रद्धा प्रपूरित नेत्र जग के भूल जाते पथ
दशा पर छोड़कर उसको दिशा लें अन्य ही कोई,

जवानी में प्रिये ! तू भी ठिकाने आ लगी हो अब
भरोगी आह ! अनजाने, न हो सन्तान तुमकी जब ।

Sonnet-VIII

Music to hear

Music to hear, why hear'st thou music sadly?
Sweets with sweets war not, joy delights in joy:
Why lov'st thou that which thou receiv'st not gladly,
Or else receiv'st with pleasure thine annoy?
If the true concord of well-tuned sounds,
By unions married, do offend thine ear,
They do but sweetly chide thee, who confounds
In singleness the parts that thou shouldst bear.
Mark how one string, sweet husband to another,
Strikes each in each by mutual ordering;
Resembling sire and child and happy mother,
Who, all in one, one pleasing note do sing:
Whose speechless song being many, seeming one,
Sings this to thee: 'Thou single wilt prove none.'

बना संगीत सुनने को इसे सुनती न क्यों मन से
मधुर से मधु नहीं लड़ते, मजा में ही मजा आता
उसे क्यों चाहती हो जो सहज मिलता नहीं तुमसे !
उसी से तुष्ट रहती क्यों, तुम्हें जो कष्ट पहुँचाता !
बंधे स्वर-ताल में सम्यक् विवाहित से सजीले स्वर
तुम्हारे कर्णकुहरों में पहुँच यदि कष्ट देते हों,
भले दें पर मधुरता से उन्हें पफटकारते सुन्दर
भुलाकर अंग अपने जो अकेले रंग लेते हों,
विचारो, एक तन्वी दूसरी से प्रेम से कैसे
सहज किस भाँति देखो तो परस्पर मेल खाती है,
सुखी माता, पिता, बच्चों सहित परिवार हो जैसे
सुरीले कण्ठ से बस एक ही आवाज आती है,

कई स्वर, गीत-शब्दविहीन, मिलकर एक, सुन लोगी
यही गाते, 'अकेली तुम, किसी की भी नहीं होगी ।'





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-IX

Is it for fear

Is it for fear to wet a widow's eye,
That thou consum'st thy self in single life?
Ah! if thou issueless shalt hap to die,
The world will wail thee like a makeless wife;
The world will be thy widow and still weep
That thou no form of thee hast left behind,
When every private widow well may keep
By children's eyes, her husband's shape in mind:
Look what an unthrift in the world doth spend
Shifts but his place, for still the world enjoys it;
But beauty's waste hath in the world an end,
And kept unused the user so destroys it.
No love toward others in that bosom sits
That on himself such murd'rous shame commits.

बड़े मत आँख से पानी, जवानी हो नहीं विधवा
इसी से शून्य जीवन में अकेली तप रही हो क्या?
अगर सन्तति बिना ही छोड़नी तुमको पड़े दुनिया
जमाना चीख मारेगा, न सचमुच रह गयी हो क्या ?
तुम्हें खोकर धरा विधवा सदृश आँसू बहायेगी
कि अपने बाद अपने रूप का प्रतिनिधि नहीं छोड़ा,
जहाँ प्रत्येक विधवा सोचकर यह शान्ति पायेगी
कि प्रिय ने शिशु-दृशों में नेह का बन्धन नहीं तोड़ा,
विचारो, स्वर्ग का यह डंग भी कितना निराला है
रकम केवल जगह बदले, जमाना मौज लेता है,
मगर यह रूप का विघटन बढ़ा ही कष्टवाला है
बनाकर व्यर्थ रखता और कर बर्बाद देता है,

किसी के भी हृदय में प्यार घर करता नहीं उसका
स्वयं अपने लिए अत्यन्त घातक कार्य है जिसका ।

Sonnet-X

For shame deny

For shame deny that thou bear'st love to any,
Who for thy self art so unprovident.
Grant, if thou wilt, thou art beloved of many,
But that thou none lov'st is most evident:
For thou art so possessed with murderous hate,
That 'gainst thy self thou stick'st not to conspire,
Seeking that beauteous roof to ruinate
Which to repair should be thy chief desire.
O! change thy thought, that I may change my mind:
Shall hate be fairer lodged than gentle love?
Be, as thy presence is, gracious and kind,
Or to thyself at least kind-hearted prove:
Make thee another self for love of me,
That beauty still may live in thine or thee.

हवा के नाम पर इनकार कर दो, 'प्यार करते हैं'
तुम्हारे वास्ते बैठा हुआ यूँ, कौन खाली है,
चलो स्वीकार, पर तुमपर हजारों लाख मरते हैं,
तुम्हारा प्यार पाये कौन ऐसा भाग्यशाली है !
सबब, दिल में तुम्हारे है लगा अम्बार नफरत का
जरा भी कौल पर अपने कभी टिकने न पाते हो,
तुम्हें जो छत बनानी चाहिए थी, घर मुहब्बत का
उसी में आग अपने हाथ से आकर लगाते हो,
इरादे जल्द बदलो, मैं बदल दूँ ख्याल भी अपना
घृणा सुन्दर बसा लूँ खूब, भोले प्यार के बदले,
मिला है रूप सुन्दर, हो भला यदि शील भी उतना
बनो या वज्र-सा निष्ठुर, कभी दिल भी नहीं पिघले,

अगर है प्यार हमसे रूप कर लो अन्य ही धारण
रहे सौन्दर्य तुममें या तुम्हारे प्यार के कारण ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XI

As fast as thou

As fast as thou shalt wane, so fast thou grow'st
In one of thine, from that which thou departest;
And that fresh blood which youngly thou bestow'st,
Thou mayst call thine when thou from youth convertest.
Herein lives wisdom, beauty, and increase;
Without this folly, age, and cold decay:
If all were minded so, the times should cease
And threescore year would make the world away.
Let those whom nature hath not made for store,
Harsh, featureless, and rude, barrenly perish:
Look whom she best endowed, she gave the more;
Which bounteous gift thou shouldst in bounty cherish:
She carved thee for her seal, and meant thereby,
Thou shouldst print more, not let that copy die.

बढ़ी जाती, अहो ! जिस वेग से वैसे घटोगी तुम
इसी सौन्दर्य में, जिससे बिलग तुम हो रही हो अब,
रुधिर उपहार दे जो शब्द उसका ही मधुर जीवन
कहेगा, वह हमारा है, जवानी रह न जाये जब !
प्रचुर हो और सुन्दर हो, इसी में बुद्धिमानी है,
नहीं तो मूर्खता है, वृद्धता है, नाश अति निष्ठुर,
यही करने लगे यदि सब, खतम समझो कहानी है
भिट्टेगा विश्व सुन्दर कौड़ियों में तीन ही द्रुततर !
बने हैं जो न संवय को प्रकृति से, वे करें ऐसा
निष्ठुर, नादान, अति विद्रुप भरते हैं स्वयं में ही,
जिसे चाहा हृदय से भर दिया उसने उसे कैसा
विवर्द्धित हो स्वयं औदार्य के इस आचरण में ही,

मुहर तुमको बनाया, तुम, अहो ! जिस भावना की कृति
बढ़े विस्तार मुद्रण का, न होवे लुप्त मौलिक प्रति ।

Sonnet-XII

When I do count

When I do count the clock that tells the time,
And see the brave day sunk in hideous night;
When I behold the violet past prime,
And sable curls, all silvered o'er with white;
When lofty trees I see barren of leaves,
Which erst from heat did canopy the herd,
And summer's green all girded up in sheaves,
Borne on the bier with white and bristly beard,
Then of thy beauty do I question make,
That thou among the wastes of time must go,
Since sweets and beauties do themselves forsake
And die as fast as they see others grow;
And nothing 'gainst Time's scythe can make defence
Save breed, to brave him when he takes thee hence.

गिर्नू टिक-टिक घड़ी की, जो समय की सूचना देती
प्रखर दिनमान नीरख रात में डूबे, इसे देखूँ,
कटी गुलनार की कैसे जवानी की मधुर खेती
बढ़ी जब काकुलों पर चाँदनी, बैठा यही सोचूँ,
उठाये सिर खड़े तरुवृन्द पत्तों से रहित डाली,
बिठाते छॉह में थे डोर को जो तप्त ज्वाला में,
बहारों का जमाना लद गया है, दग्ध हरियाली
जनाजा उठ गया उनका, न ठहरे रंगशाला में,
यही जब हाल, पूर्ण मैं -बता, ऐ रूपसी मुझको
समय की व्यर्थता में एक दिन आखिर मिलेगी तू,
मधुरता और सुन्दरता तजेंगे एक दोनों को
बढ़ेंगे अन्य जितना शीघ्र, उतना ही घटेगी तू,

समय की धार के आगे न कुछ भी सूझ पायेगा
सिवा अभिजात के जो हाथ से उसके बचायेगा ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XIII

O! that you were

O! that you were your self; but, love, you are
No longer yours, than you your self here live:
Against this coming end you should prepare,
And your sweet semblance to some other give:
So should that beauty which you hold in lease
Find no determination; then you were
Yourself again, after yourself's decease,
When your sweet issue your sweet form should bear.
Who lets so fair a house fall to decay,
Which husbandry in honour might uphold,
Against the stormy gusts of winter's day
And barren rage of death's eternal cold?
O! none but unthrifths. Dear my love, you know,
You had a father: let your son say so.

अहा, तुम तो तुम्हीं, लेकिन स्वयं के हो नहीं सकते
रहोगे तुम नहीं जब तक स्वयं निज रूप में प्यारे,
रहो सन्तुष्ट अन्तिम दौब तक इस रूप के चलते
किसी को निज मधुरतम रूप का प्रतिनिधि बना जा रे,
तुम्हारा रूप बन्धक है तुम्हारे पास जो इतना
उसे क्या चाहिए अपने लिए फिर मार्ग तब कोई,
बनोगे मृत्यु के उपरान्त अपने-आप फिर उतना
मधुर इस रूप में अभिजात ले आकार जब कोई,
गिरे सुन्दर भवन अपना, भला, यह कौन चाहेगा
कहो स्वामित्व भी वह कौन मर्यादित सुरक्षा दे-
भयंकर शीत के तूफान से, जब टूट आयेगा
निदुरतम मृत्यु आकर रोष में जब आग धधका दे,

उदारों के सिवा कोई नहीं, प्यारे, विदित तुमको
तुम्हारे भी पिता, निज पुत्र को यह तथ्य कहने दो।

Sonnet-XIV

Not from the stars

Not from the stars do I my judgement pluck;
And yet methinks I have Astronomy,
But not to tell of good or evil luck,
Of plagues, of dearths, or seasons' quality;
Nor can I fortune to brief minutes tell,
Pointing to each his thunder, rain and wind,
Or say with princes if it shall go well
By oft predict that I in heaven find:
But from thine eyes my knowledge I derive,
And, constant stars, in them I read such art
As truth and beauty shall together thrive,
If from thyself, to store thou wouldst convert;
Or else of thee this I prognosticate:
Thy end is truth's and beauty's doom and date.

सितारों से न यद्यपि ज्ञान का निर्देश हूँ लेता
स्वयं को किन्तु ज्योतिष-शास्त्र का ज्ञाता समझता मैं,
न समझो, भाग्य अच्छा या बुरा है, यह बता देता
महामारी, अकाल, अभाव, तु का गुण न कहता मैं,
नहीं संकेत करता हूँ समय की सुष्ठतम गति का
कि कब बिजली गिरे, आँधी उठे वा मेह बरसेगा,
न कोई ज्ञान भूपतियों, नरेशों की परिस्थिति का
लिखा जो भाग्य में उनके, समय जिस भाँति आयेगा,
तुम्हारे ही दृष्टि में ज्ञान का भण्डार है निश्चित
इन्हीं शाश्वत सितारों से कलाएँ सीखता प्यारी,
सतत एकत्र दोनों सत्य, सुन्दर साथ हों विकसित
तुम्हीं से यदि मिलें निधियाँ, बदल जाये दशा सारी,

घटित ऐसा न हो यदि तो, समय जो तथ्य लायेगा-
तुम्हारे बाद जग में सत्य, सुन्दर रह न जायेगा।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XV

When I consider

When I consider every thing that grows
Holds in perfection but a little moment,
That this huge stage presenteth nought but shows
Whereon the stars in secret influence comment;
When I perceive that men as plants increase,
Cheered and checked even by the self-same sky,
Vaunt in their youthful sap, at height decrease,
And wear their brave state out of memory;
Then the conceit of this inconstant stay
Sets you most rich in youth before my sight,
Where wasteful Time debateth with decay
To change your day of youth to sullied night,
And all in war with Time for love of you,
As he takes from you, I engraft you new.

विवर्द्धित वस्तुओं पर जब हमारा ध्यान जाता है
मिली है पूर्णता यद्यपि क्षणिक अस्तित्व है उनका,
'न इत्यम्' का प्रदर्शन, मंच यह विस्तृत दिखाता है
रहस्यावृत प्रभावित तारकों से खेल है जिनका,
जहाँ इन्सान पौधों की तरह बढ़ते चले आते
गगन प्रेरित, गगन बाधित, गगन के ही सहारे से,
जवानी पर क्षणिक इतरा उठें, तत्काल मुरझाते,
बढ़े जाते प्रबल अभिमान, विस्मृति के किनारे से,
अनस्थिर रूप की छलना, नयन में जगमगाती तुम
जवानी में तुम्हें भरपूर सर्वाधिक सजा दे वह,
विधातक-काल, निष्ठुर-नाश से तब उलझता उस क्षण
जवानी के दिनों को रात में कैसे बदल दे वह !

तुम्हारे प्यार के कारण समय से युद्ध सब लेते
तुम्हें जब छीनता वह, हम तुम्हें अभिनव बना देते ।

Sonnet-XVI

But wherefore do not you

But wherefore do not you a mightier way
Make war upon this bloody tyrant, Time?
And fortify your self in your decay
With means more blessed than my barren rhyme?
Now stand you on the top of happy hours,
And many maiden gardens, yet unset,
With virtuous wish would bear you living flowers,
Much liker than your painted counterfeit:
So should the lines of life that life repair,
Which this, Time's pencil, or my pupil pen,
Neither in inward worth nor outward fair,
Can make you live your self in eyes of men.
To give away yourself, keeps yourself still,
And you must live, drawn by your own sweet skill

तुम्हीं तब क्यों न कर देतीं चढ़ाई आततायी पर
पिपासित खतलोलुप काल पर अपने पराक्रम से,
बचा अस्तित्व लो अपना उठाकर दुर्ग दृढ़ सत्वर
लगा निज दिव्यतर साधन निरर्थक छन्द के क्रम से,
विभव आनन्द के सुख के शिखर पर आ खड़ी हो तुम
कुँआरी कामनाओं के अभी मधुवन न सज पाये,
बिछाये जो तुम्हारे पंथ में अभिनव सुमन चुन-चुन
तुम्हारा रूप कृत्रिम रंग में जैसे उतर आये!
लकीरें जिन्दगी की जिन्दगी को लें बचा ऐसे
समय की लेखनी तीखी, हमारे ये धिसे आखिर,
न जिनमें अन्दरूनी दम, चमक बाहर न हो जिसमें
न रख पायें जमाने की नजर में जो तुम्हें आखिर,

लुटाने के लिये, कारण, उसे हम पास रखते हैं
स्वयं निर्मित किले में ही रहो, हम कुछ न कहते हैं ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XVII

Who will believe

Who will believe my verse in time to come,
If it were filled with your most high deserts?
Though yet heaven knows it is but as a tomb
Which hides your life, and shows not half your parts.
If I could write the beauty of your eyes,
And in fresh numbers number all your graces,
The age to come would say 'This poet lies;
Such heavenly touches ne'er touched earthly faces.'
So should my papers, yellowed with their age,
Be scorned, like old men of less truth than tongue,
And your true rights be termed a poet's rage
And stretched metre of an antique song:
But were some child of yours alive that time,
You should live twice, in it, and in my rhyme.

हमारे छन्द पर आगे किसे विश्वास आयेगा
तुम्हारे ही हृदय की कामनाओं से भरे हैं ये,
प्रतीतित कब्र-सा यद्यपि, सही मालिक बतायेगा
छिपी जो जिन्दगी इसमें उसे दिखला सकेंगे ये,
तुम्हारे नेत्र का सौन्दर्य ही मैं, काश, लिख पाता
नयी तरतीब से सारी अदाओं को गिना सकता,
कहेगा विश्व भावी झूठ है, कवि झूठ बतलाता
कभी सौन्दर्य यह स्वर्गिक धरा पर आ नहीं सकता,
जमाने का असर इन कागजों को जर्द कर डाले
हँसी कहकर उड़ावी जाय, बूढ़ा व्यर्थ बकता है,
तुम्हारी पात्रता का श्रेय कवि के रोष को माने
गठन है छन्द का बेडौल, बासी तथ्य गड़ना है,

रहा यदि एक भी अभिजात तेरा उस जमाने में
मिलेगी उम्र दुहरी विश्व में, कवि के खजाने में।

Sonnet-XVIII

Shall I compare thee

Shall I compare thee to a summer's day?
Thou art more lovely and more temperate:
Rough winds do shake the darling buds of May,
And summer's lease hath all too short a date:
Sometime too hot the eye of heaven shines,
And often is his gold complexion dimmed,
And every fair from fair sometime declines,
By chance, or nature's changing course untrimmed:
But thy eternal summer shall not fade,
Nor lose possession of that fair thou ow'st,
Nor shall death brag thou wander'st in his shade,
When in eternal lines to time thou grow'st,
So long as men can breathe, or eyes can see,
So long lives this, and this gives life to thee.

बहारों के जमाने से करूँ तुलना तुम्हारी क्या
प्रिये, इससे कहीं सुन्दर अधिक अनुकूल तुम प्रतिक्षण,
हवा के तीव्र झोंकों में झुलस जायें मृदुल कलियारें,
बसन्ती वैभवों को है मिला लेकिन क्षणिक जीवन
कभी हो क्रुद्ध बरसाता गगन अति तप्त अंगारे
सुनहली कान्ति में प्रायः मलिनता व्याप्त हो आती
कभी सौन्दर्य का सौन्दर्य रह-रहकर उतर जाये
कहो संयोग या समझो प्रकृति की गति बदल जाती
तुम्हारा प्रिय बसन्ती रूप अक्षय है, न कुम्हलाये
भरी सुषमा प्रिये, तुममें कभी घटने न पायेगी,
न लुटे मौत, उसकी छाँह में ही तू जहाँ जाये
अमर इन पंक्तियों में तू युगों तक मुस्करायेगी!

धरा में साँस लें मानव, नयन जब तक निहारेंगे
हमारे छन्द तब तक आरती तेरी उतारेंगे।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XIX

Devouring Time

Devouring Time, blunt thou the lion's paws,
And make the earth devour her own sweet brood;
Pluck the keen teeth from the fierce tiger's jaws,
And burn the long-lived phoenix in her blood;
Make glad and sorry seasons as thou fleet'st,
And do whate'er thou wilt, swift-footed Time,
To the wide world and all her fading sweets;
But I forbid thee one most heinous crime:
O! carve not with thy hours my love's fair brow,
Nor draw no lines there with thine antique pen;
Him in thy course untainted do allow
For beauty's pattern to succeeding men.
Yet, do thy worst old Time: despite thy wrong,
My love shall in my verse ever live young.

भले ये सर्वग्रासी काल, शेरों को हँफा डाले
करे कुछ बात ऐसी भूमि अपना भ्रूण खा जाये,
खवं के ही रुधिर में 'दीर्घजीवी' को पका डाले
निकाले दाँत उसके जो भयंकर बाघ मुँह बाये,
बना मौसम खुशी के और गम के चाल से अपनी
पगों में पंख बाँधे काल, कर ले जो तुम्हें भाये,
लिये फीकी मधुर सुषमा अखिल विस्तारयुत अपनी
घृणित अपराध लेकिन यह, न तेरे ध्यान में आवे,
न डाले चक्र में अपने मनोरम प्यार को मेरे
न उस पर दे धुमा तू लेखनी जर्जर कहीं अपनी,
अछूता अप्रभावित ही रहे वह रंग से तेरे
रहे सौन्दर्य का आदर्श जग में, हो कृपा इतनी,

नहीं यदि, काल बूढ़े, कर दिखा शैतानियों को ही
रहेगा प्यार मेरा नौजवाँ इन पंक्तियों में ही।

Sonnet-XX

A woman's face

A woman's face with nature's own hand painted,
Hast thou, the master mistress of my passion;
A woman's gentle heart, but not acquainted
With shifting change, as is false women's fashion:
An eye more bright than theirs, less false in rolling,
Gilding the object whereupon it gazeth;
A man in hue all hues in his controlling,
Which steals men's eyes and women's souls amazeth.
And for a woman wert thou first created;
Till Nature, as she wrought thee, fell a-doting,
And by addition me of thee defeated,
By adding one thing to my purpose nothing.
But since she prick'd thee out for women's pleasure,
Mine be thy love and thy love's use their treasure.

गढ़ा है रूप नारी का प्रकृति ने हाथ से अनुपम
हमारी भावनाओं का यही है केन्द्र जीवन का,
मिला नारी-हृदय तुमको अपरिचित किन्तु परिवर्तन
बदलता नारियों का जिस तरह श्रृंगार क्षण-क्षण का,
नयन उनसे अधिक ज्योतिषित, नहीं उनकी तरह चंचल
पड़े जिस वस्तु पर उसको बना दें वस्तु सोने की,
पुरुष का रंग जो सब रंग पर शासन करे अविचल
बदल दे भाव नारी का बचाकर आँख उसकी भी,
विधाता का प्रथम निर्माण नारी रूप यह तेरा
प्रकृति ने किन्तु जब इस रूप को धूमिल बना डाला,
तुम्हारी पूर्णता के हेतु यह निर्माण है मेरा
तुम्हारी कामनाओं का सदा भरता रहूँ प्याला,

प्रकृति ने नारियों के मोद से तुमको उठाया जब
खजाना प्यार का तुम पर प्रिये, मैंने लुटाया सब।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XXI

So is it not with me

So is it not with me as with that Muse,
Stirred by a painted beauty to his verse,
Who heaven itself for ornament doth use
And every fair with his fair doth rehearse,
Making a couplement of proud compare
With sun and moon, with earth and sea's rich gems,
With April's first-born flowers, and all things rare,
That heaven's air in this huge rondure hems.
O! let me, true in love, but truly write,
And then believe me, my love is as fair
As any mother's child, though not so bright
As those gold candles fixed in heaven's air:
Let them say more that like of hearsay well;
I will not praise that purpose not to sell.

भ्रम में आ गयी तू शारदे, लेकिन न मैं भ्रम में
प्रभावित रूप से उसने किया जो छन्द में अंकित,
भले उस रूप ने पहने मँगाकर स्वर्ग से गहने
सभी सुषमा जगत की हो भले उस रूप पर अर्पित,
बगल में गर्व से बैठे, न समझे कम सितारों से
स्वयं को चाँद-सूरज से, रतन से सिन्धु धरती के,
बसन्ती फूल सा पहला, सजा दुर्लभ सिंगारों से,
विधाता की रची जो सृष्टि स्वर्गिक दीप्ति से दमके,
अरे, मुझ सत्यप्रेमी को मगर वह तथ्य लिखने दे
करो विश्वास मेरा प्रेम उतना ही रुपहला है,
कि जितना लाल, माँ की गोद में यद्यपि न यों चमके
चमकता जिस तरह वह ज्योति का मण्डल सुनहला है,

कही बातें, सुनी बातें, कहें जो चाहते जितना
न मुझको बेचना कुछ है प्रशंसा व्यर्थ है करना ।

Sonnet-XXII

My glass shall not

My glass shall not persuade me I am old,
So long as youth and thou are of one date;
But when in thee time's furrows I behold,
Then look I death my days should expiate.
For all that beauty that doth cover thee,
Is but the seemly raiment of my heart,
Which in thy breast doth live, as thine in me:
How can I then be elder than thou art?
O! therefore, love, be of thyself so wary
As I, not for myself, but for thee will;
Bearing thy heart, which I will keep so chary
As tender nurse her babe from faring ill.
Presume not on thy heart when mine is slain,
Thou gav'st me thine not to give back again.

नहीं भ्रमायेगा, 'मैं वृद्ध' मेरा आइना मुझको
जवानी और तुम हो एक ही तारीख में जब तक,
समय की लेखनी से जब सँचित मैं देखता तुमको
मुझे खलता, गयी क्योंकि न मेरी मृत्यु हो अब तक,
लदी हो भार शोभा के कही परिधन क्या उसका
हमारा ही हृदय वह आभरण जिसमें सजी हो तुम,
तुम्हारा वास मुझमें है-तुम्हारे वक्ष में उर का
बताओ उम्र में किस भाँति तुमसे फिर अधिक हैं हम ?
प्रिये, तुमको परिस्थिति से सदा चैतन्य रहना है
न मैं कुछ स्वार्थवश अपने, तुम्हारे ही लिए तत्पर,
तुम्हारा उर सुकोमल पास जब तब क्या भटकना है
रहूँ, बीमार शिशु के वास्ते ज्यों धाय चिन्तातुर ।

न यदि मेरा हृदय तेरे हृदय की कल्पना कैसी
न दी है वस्तु यह तुमने समझ कर लौटने जैसी ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XXIII

As an unperfect actor

As an unperfect actor on the stage,
Who with his fear is put beside his part,
Or some fierce thing replete with too much rage,
Whose strength's abundance weakens his own heart;
So I, for fear of trust, forget to say
The perfect ceremony of love's rite,
And in mine own love's strength seem to decay,
O'ercharged with burthen of mine own love's might.
O! let my looks be then the eloquence
And dumb presagers of my speaking breast,
Who plead for love, and look for recompense,
More than that tongue that more hath more express'd.
O! learn to read what silent love hath writ:
To hear with eyes belongs to love's fine wit.

दशा दयनीय अकुशल पात्र की हो मंच पर जैसे
कमी भयभीत हो जो पाठ अपना भूल जाता है,
कमी या रोष में आ जो भवानक हो उठे ऐसे
लगा दे शक्ति वह जिससे कि दम ही टूट जाता है,
दशा मेरी यही, विश्वास-भय देता नहीं कहने
कि सुन्दर पूर्ण मनहर रूप सुखमय प्रेम का कितना,
पुनः लगता स्वयं ही प्रेम का यह दुर्ग भी डहने
सबल अभिभूत बोझिल प्रेम से मेरा हृदय इतना,
हमारे ग्रन्थ को ही तब मधुर उद्घोष करने दो
हृदय के स्वर इन्हीं के मौन मंत्रों में मुखर होवे,
करें जो प्रेम को परिपुष्ट, इनको प्रेम मिलने दो
अपेक्षाकृत अधिक, जो श्रेय रसना को जगत देवे,

अरे, यह मूक वाणी प्रेम की तुम सीख लो पढ़ना
कला है प्रेम की सुन्दर नयन से ही श्रवण करता ।

Sonnet-XXIV

Mine eye hath played

Mine eye hath played the painter and hath steeled,
Thy beauty's form in table of my heart;
My body is the frame wherein 'tis held,
And perspective that is best painter's art.
For through the painter must you see his skill,
To find where your true image pictured lies,
Which in my bosom's shop is hanging still,
That hath his windows glazed with thine eyes.
Now see what good turns eyes for eyes have done:
Mine eyes have drawn thy shape, and thine for me
Are windows to my breast, where-through the sun
Delights to peep, to gaze therein on thee;
Yet eyes this cunning want to grace their art,
They draw but what they see, know not the heart.

झलकती छवि हृदय में जो नयन की चित्रकारी है
किया चित्रित उसी ने रूप उर के पृष्ठ पर सुन्दर,
बदन के चौकटे में प्रिय सजी प्रतिमा तुम्हारी है
चित्रों की कला उत्कृष्ट वह बांकी छटा मनहर,
चित्रों नयन के माध्यम कला उसकी निहारोगे
लगाने को पता सच रूप तेरा है कहाँ शोभित
हृदय की हाट में अब भी सुसज्जित चित्र पाजोगे
बनाते स्निग्ध वायातन, तुम्हारे नयन अनुरजित,
नयन के हित नयन ने जो किया वह काम देखो तो
तुम्हारा रूप अति सुन्दर हमारे नयन ने र्थीचे,
सुलीं ज्यों खिड़कियाँ उर में हमारे, नयन तेरे दो
कि जिनसे झाँक रवि भी रूप में अपना हृदय सीचे !

मगर ये चतुर आँखें इस कला में हों निपुण जितनी
हृदय की बात भी जानें, न इनमें शक्ति है इतनी।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XXV

Let those who are in favour

Let those who are in favour with their stars
Of public honour and proud titles boast,
Whilst I, whom fortune of such triumph bars
Unlook'd for joy in that I honour most.
Great princes' favourites their fair leaves spread
But as the marigold at the sun's eye,
And in themselves their pride lies buried,
For at a frown they in their glory die.
The painful warrior famoused for fight,
After a thousand victories once foiled,
Is from the book of honour razed quite,
And all the rest forgot for which he toiled:
Then happy I, that love and am beloved,
Where I may not remove nor be removed.

उन्हें छेड़ो न जो अपने सितारों की बुलन्दी पर
मिला सम्मान दुनिया से फुलाकर जो चलें सीना,
इधर दुर्भाग्य का मारा मुझे संसार बन्दीघर
खुशी चाहा जभी, प्याला जहर का है पड़ा पीना,
विभव-विस्तार, कीर्ति-प्रसार, भूपतिवों-नरेशों का
कि जैसे फूल हो सूरजमुखी का खिल रहा कोई,
मगर होता दफन उर में उन्हीं के, शव गरुरों का
बहारों की वही दुनिया कफन ओढ़े पड़ी सोयी,
हजारों जंग जीते जो बड़े थे सूरमा नामी
अनोखी वीरता की छाप डाली थी जमाने पर,
गया मिट पोथियों से नाम अपने आप सैलानी
न आता कौल भी अब याद उनको भूल जाने पर,

सुखी मैं इसलिये कि प्यार करता, प्यार पाता हूँ,
न मैं ही भूलता उसको, भुलाया भी न जाता हूँ।

Sonnet-XXVI

Lord of my love

Lord of my love, to whom in vassalage
Thy merit hath my duty strongly knit,
To thee I send this written embassy,
To witness duty, not to show my wit:
Duty so great, which wit so poor as mine
May make seem bare, in wanting words to show it,
But that I hope some good conceit of thine
In thy soul's thought, all naked, will bestow it:
Till whatsoever star that guides my moving,
Points on me graciously with fair aspect,
And puts apparel on my tottered loving,
To show me worthy of thy sweet respect:
Then may I dare to boast how I do love thee;
Till then, not show my head where thou mayst prove me

हमारे प्रेम के आराध्य, बन्धन में तुम्हारे हम
रहें प्रस्तुत करें, सेवा, तुम्हारा रूप-गुण ऐसा !
पठाऊँ मैं लिखित सन्देश, यह स्वीकार कर लो तुम
तुम्हारी भक्ति का बल है, न मुझमें, बुद्धि की प्रभुता
प्रबल बस भक्ति मुझमें, बुद्धि मेरी हीन है इतनी
न क्षमता शब्द में किंचित, निरर्थक नमन कर देगी,
मगर विश्वास है मुझको तुम्हारी कल्पना जितनी
तुम्हारी आत्मा का शुद्ध चिन्तन तत्व भर देगी!
सितारे जो चलाते हैं मुझे जब तक चलायेंगे
कभी यदि वह सुनहरा क्षण अदा के साथ आवेगा,
हमारा हीन लगता प्रेम भूषण से सजायेंगे
तुम्हारे रूप के उपयुक्त जीवन जगमगावेगा,

तभी सीना फुलाकर मैं कहूँगा प्यार तुमसे है
न तब तक बुद्धि में आना, न कहना प्यार मुझसे है।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XXVII

Weary with toil

Weary with toil, I haste me to my bed,
The dear repose for limbs with travel tired;
But then begins a journey in my head
To work my mind, when body's work's expired:
For then my thoughts--from far where I abide--
Intend a zealous pilgrimage to thee,
And keep my drooping eyelids open wide,
Looking on darkness which the blind do see:
Save that my soul's imaginary sight
Presents thy shadow to my sightless view,
Which, like a jewel hung in ghastly night,
Makes black night beauteous, and her old face new.
Lo! thus, by day my limbs, by night my mind,
For thee, and for myself, no quiet find.

थकन दिन की लिये लाचार शनयातुर चला सोने
मिले विश्राम विरहित पाँव को, हारे हुए तन को,
तमी उजड़े हुए दिल से सफर लगता शुरू होने
गये जब टूट सारे अंग, पर लगने लगे मन को,
हृदय के शून्य गहर से उठे तब ध्यान अनबोले
बड़े उत्साह से वे तीर्थयात्रा पर चलें तेरी,
उनींदी आँख की पलकें प्रतीक्षा में रहें खोले
अँधे में जमाये दृष्टि, अन्ध की दशा मेरी,
अकेली कल्पना की दृष्टि, आँखें प्राण की प्रियतम,
तुम्हारी मंजु छाया अन्ध नयनों को मिला देती,
अधर में जगमगाती जो रतन सी, रात भीषणतम
मगर इस रात को भी खूबसूरत जो बना देती,

अँरे, इस भाँति दिन में देह निशि में प्राण वे मेरे
तुम्हारे और मेरे वास्ते देते सतत फेर।

Sonnet-XXVIII

How can I then return

How can I then return in happy plight,
That am debarred the benefit of rest?
When day's oppression is not eas'd by night,
But day by night and night by day oppressed,
And each, though enemies to either's reign,
Do in consent shake hands to torture me,
The one by toil, the other to complain
How far I toil, still farther off from thee.
I tell the day, to please him thou art bright,
And dost him grace when clouds do blot the heaven:
So flatter I the swart-complexion'd night,
When sparkling stars twire not thou gild'st the even.
But day doth daily draw my sorrows longer,
And night doth nightly make grief's length seem
stronger.

सुखद किस भाँति हों मेरी अवस्थाएँ बताओ तो
न जब उपलब्ध हो विश्राम की सुविधा कहीं कोई,
न सहलाये निशा निष्ठुर दिवस की वेदनाओं को
दुखी जब रात से दिन, और दिन से रात जब रोयी,
परस्पर शत्रु यद्यपि हैं नहीं अनुकूलता इनमें
सताने के लिए मुझको मगर आँखें मिलाते हैं,
चलाये दिन, गिनाये रात बुटियाँ जो भरीं मुझमें
चलूँ कितना, सहूँ कितना, विरह के क्षण न जाते हैं,
काहा करता दिवस को तू बड़ा ही कान्तिवाला है
भले ही स्वर्ग पर बादल तिमिर के हों घने छाये,
अँधेरी रात हो काली, मगर क्या डब निराला है
गजब की रोशनी तारा नजर कोई नहीं आये।

हमारी वेदना में वृद्धि करते जा रहे हैं दिन
इधर अवसाद को स्थिर रात करती जा रही पल-छिन।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XXIX

When in disgrace

When in disgrace with fortune and men's eyes
I all alone beweepe my outcast state,
And trouble deaf heaven with my bootless cries,
And look upon myself, and curse my fate,
Wishing me like to one more rich in hope,
Featured like him, like him with friends possessed,
Desiring this man's art, and that man's scope,
With what I most enjoy contented least;
Yet in these thoughts my self almost despising,
Haply I think on thee, and then my state,
Like to the lark at break of day arising
From sullen earth, sings hymns at heaven's gate;
For thy sweet love remembered such wealth brings
That then I scorn to change my state with kings.

नजर से हीन ठुकराना गया दुर्भाग्य का मारा
अधम गति पर कभी अपनी जमी आँसू बहाता हूँ,
पुकारों से बधिर स्वर्गाधिपति के नाम का नारा
लगा निष्फल, कभी दुर्दैव को दोषी बनाता हूँ,
जगें जब कामना मैं भी बनूँ उन भाग्यवानों सा
घिरे हैं दोस्तों से औ' भरे हैं जो उमीदों से,
मुझे मिलती कला उन मानवों की, धन खजानों का
मजे लेता, न पाता वैन यद्यपि इन तरीकों से,
हिंकारत की नजर से देखता खुद को ख्यालों में
तभी अपनी दशा का औ' तुम्हारा भान हो आता,
सुबह ज्यों कोंकिला से बूक उठती हो रसालों में
धरा पर स्वर्ग से ज्यों प्रार्थना का स्वर बिखर जाता !

तुम्हारे प्यार की मधुस्मृति विभव ऐसा लुटाती है
नरेशों की दशा पर तब दया शत बार आती है ।

Sonnet-XXX

When to the sessions

When to the sessions of sweet silent thought
I summon up remembrance of things past,
I sigh the lack of many a thing I sought,
And with old woes new wail my dear time's waste:
Then can I drown an eye, unused to flow,
For precious friends hid in death's dateless night,
And weep afresh love's long since cancelled woe,
And moan the expense of many a vanished sight:
Then can I grieve at grievances foregone,
And heavily from woe to woe tell o'er
The sad account of fore-bemoaned moan,
Which I new pay as if not paid before.
But if the while I think on thee, dear friend,
All losses are restor'd and sorrows end.

विचारों की मधुरतम मौन बेला में जभी होता
सजल स्मृतियाँ उभर आतीं गये-बीते जमाने की,
अभावों पर बहुत सी वस्तुओं के नाम पर रोता
पुराने औ' नये दुख में, अवधि है दूब जाने की !
दृष्टों को क्या सजल कर लूँ बने हैं जो न रोने को
गये खो मित्र जो अनमोल निशि में मृत्यु की काली,
पुराने प्यार, पिछले रंज को फिर से पिरोने को
रहूँ तत्पर, भस्म आहें, गयी उड़ जो सरस लाली,
गये जो बीत रंजोगम, उन्हीं को क्या रहूँ होता
दुखों से बात दुख की हो, रहे चलता सतत यह क्रम
बढ़े फिर अश्रु जिनके नाम पर अब तक रहा रोता
अदा करता रहूँ फिर-फिर, चुकाया हो न जैसे ऋण

सन्ने, ऐ प्राण प्यारे, जब तुम्हारा ध्यान हो आता
सभी क्षतिपूर्ति हो जाती, दुखों का अन्त हो जाता ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XXXI

Thy bosom is endeared

Thy bosom is endeared with all hearts,
Which I by lacking have supposed dead;
And there reigns Love, and all Love's loving parts,
And all those friends which I thought buried.
How many a holy and obsequious tear
Hath dear religious love stol'n from mine eye,
As interest of the dead, which now appear
But things removed that hidden in thee lie!
Thou art the grave where buried love doth live,
Hung with the trophies of my lovers gone,
Who all their parts of me to thee did give,
That due of many now is thine alone:
Their images I loved, I view in thee,
And thou (all they) hast all the all of me.

तुम्हारे वक्ष में जिनके हृदय का प्यार पलता है
न अपने बीच होने से उन्हें खोया हुआ जाना
वहाँ पर प्रेम का साम्राज्य सांगोपांग चलता है
सखा औ मित्र जितने थे, दफन सब हो गये, माना,
चढ़ाकर अर्घ्य आँसू का, नयन का नीर, गंगाजल
उमड़कर भाव श्रद्धा के हृदय में आप भर आये,
दिवंगत आत्मा के प्रति गयी पर बात अब वह खुल
गये हमसे विछुड़कर जो, तुम्हीं में ही रहे छाये,
तुम्हीं वह कब्र, तुममें ही गड़ा वह प्यार है सोया
हमारे प्रेमियों की कीर्ति का परिमल तुम्हीं में है
हमारा देय उनके प्रति तुम्हीं में पूर्णतः खोया
रहा जो अंश बहुतों का, निहित केवल तुम्हीं में है,

मुझे था प्यार जिनसे अब तुम्हीं में देखता उनको
तुम्हीं जब रूप हो उनके, समर्पित मैं स्वयं तुमको ।

Sonnet-XXXII

If thou survive

If thou survive my well-contented day,
When that churl Death my bones with dust shall cover
And shalt by fortune once more re-survey
These poor rude lines of thy deceased lover,
Compare them with the bett'ring of the time,
And though they be outstripped by every pen,
Reserve them for my love, not for their rhyme,
Exceeded by the height of happier men.
O! then vouchsafe me but this loving thought:
'Had my friend's Muse grown with this growing age,
A dearer birth than this his love had brought,
To march in ranks of better equipage:
But since he died and poets better prove,
Theirs for their style I'll read, his for his love'.

रही तुम शेष औ' यदि हम मुखों के बीच मर जायें
हमारी देह पापिन मौत जब माटी बना डाले,
तुम्हारे दृष्टि-पथ में यदि कभी सौभाग्य से आवें
भरे प्रेमी हृदय के छन्द अनगढ़ दीन मतवाले,
जमाने की सभी अच्छाइयों से तोल कर लेना
भले हो लेखनी युग की हमारे काव्य से बढ़कर,
हमारे प्यार के बदले, तुकों पर ध्यान मत देना
चमकते हों भले वे श्रृंग पर, सम्मान के बढ़कर,
वचन दो किन्तु अपने प्रेमपूरित इन विचारों का
जमाने की उमर के सामने कविता पुरानी है,
हुआ जो प्यार के बदले नया उद्भव सितारों का
बड़े ही मौज में बहती नये युग की खानी है,

मगर वह मर गया जब, तथ्य क्या है, कवि इसे जानें
लगे प्रिय छन्द इनके किन्तु उसका प्यार हम मानें !





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XXXIII

Full many a glorious morning

Full many a glorious morning have I seen
Flatter the mountain tops with sovereign eye,
Kissing with golden face the meadows green,
Gilding pale streams with heavenly alchemy;
Anon permit the basest clouds to ride
With ugly rack on his celestial face,
And from the forlorn world his visage hide,
Stealing unseen to west with this disgrace:
Even so my sun one early morn did shine,
With all triumphant splendour on my brow;
But out, alack, he was but one hour mine,
The region cloud hath mask'd him from me now.
Yet him for this my love no whit disdaineth;
Suns of the world may stain when heaven's sun
staineth.

बड़ी ही शान के कितने सुहाने प्रातः हैं देखे
खुशामद में पहाड़ों के लगे शाही तरीकों से,
सुनहरे होठ से घुम्बित हरित मैदान थे जिनके
मलिन कल्लोलिनी जिनसे प्रवाहित अमिय धारों से,
कुटिलतम मेघ को आरुढ़ उनपर भी लगा तत्क्षण
खरहरा दिव्य आनन पर लगाते जा रहे थे जो,
जगत निःसंग से अस्तित्व कर प्रच्छन्न, हो उन्मन
प्रतीक्षा में अदेखे मौन अपमानित गये जो खो,
हमारा सूर्य भी इस भाँति प्रातः एक दिन चमका
विजय के चिन्ह गौरव कान्ति में भाल पर दमकी,
अरे, वह था रहा मेहमान मेरा किन्तु पल भर का
धनों के आवरण में छिपे गये वे ज्योति के कण भी,

हमारे प्यार को इस बात का किंचित् नहीं है दुःख
हजारों सूर्य डूबे, सूर्य अपना हो न यदि सन्मुख ।

Sonnet-XXXIV

Why didst thou promise

Why didst thou promise such a beauteous day,
And make me travel forth without my cloak,
To let base clouds o'ertake me in my way,
Hiding thy bravery in their rotten smoke?
'Tis not enough that through the cloud thou break,
To dry the rain on my storm-beaten face,
For no man well of such a salve can speak,
That heals the wound, and cures not the disgrace:
Nor can thy shame give physic to my grief;
Though thou repent, yet I have still the loss:
The offender's sorrow lends but weak relief
To him that bears the strong offence's cross.
Ah! but those tears are pearl which thy love sheds,
And they are rich and ransom all ill deeds.

किया वादा कहो क्यों कर सुनहरा दिन दिखाने का
चला मुझको दिया ले भी न पाया आवरण कोई,
कुटिलतम मेघ को था राह में जब टूट जाने का
तुम्हारी शक्ति भी जो थी सघन धनराशि में खोई,
धनों के बीच मुस्काना तुम्हारा है नहीं काफी
हमारे घन प्रताड़ित गाल के जलकण सुखाने को,
किसी से मिल न पायेगी तुम्हें उस कार्य की सार्वी,
त्रणों पर हाथ फेंके पर न जो इज्जत बचाने को,
तुम्हारा शोक मेरी वेदना को बल नहीं देगा
तुम्हें तो वेदना कोरी हमारी हानि गहरी हो,
करे अपराध, पछता ले, यही कितना सम्हालेगा
उसे जिसके कलेजे पर घुरी दिन-रात चलती हो,

अहो, ये अश्रु की बूँदें, तुम्हारे प्यार के मोती
सकल सुख सम्पदा इनमें, सभी अपराध धो देती ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XXXV

No more be grieved

No more be grieved at that which thou hast done:
Roses have thorns, and silver fountains mud:
Clouds and eclipses stain both moon and sun,
And loathsome canker lives in sweetest bud.
All men make faults, and even I in this,
Authorizing thy trespass with compare,
Myself corrupting, salving thy amiss,
Excusing thy sins more than thy sins are;
For to thy sensual fault I bring in sense,
Thy adverse party is thy advocate,
And 'gainst myself a lawful plea commence:
Such civil war is in my love and hate,
That I an accessory needs must be,
To that sweet thief which sourly robs from me.

करो मत व्यर्थ पश्चाताप जो भी है किया तुमने
रजत की निर्झरी में कीच, काटे हैं गुलाबों में,
ग्रहण और मेघ, सूरज-चाँद को भी लील लें पल में
अधमलतम कीट बसता है काली के मधु परागों में,
प्रकृति है भूल मानव की, सफाई में नजीरों के
सबूतों से तुम्हारा पक्ष करता हूँ प्रमाणित मैं,
विकृतियों में स्वयं पड़कर, तुम्हें सम्भव सुकृतियों दे
तुम्हारे दोष कम होंगे, अधिक करता निबाधित मैं !
तुम्हारी भोग लिप्सा का जहाँ तक प्रश्न आता है
तुम्हारे मुद्दई खुद ही तुम्हारी ही सफाई दें,
मगर मुझ पर जहाँ कानून का पाँसा पलटता है
धृणा और प्यार में संघर्ष, हम किसकी दुहाई दें!

हमें तो अन्ततः प्रिय दोष के ही पास जाना है
स्वजन बनकर जिसे लुटें हमारा ही खजाना है ।

Sonnet-XXXVI

Let me confess

Let me confess that we two must be twain,
Although our undivided loves are one:
So shall those blots that do with me remain,
Without thy help, by me be borne alone.
In our two loves there is but one respect,
Though in our lives a separable spite,
Which though it alter not love's sole effect,
Yet doth it steal sweet hours from love's delight.
I may not evermore acknowledge thee,
Lest my bewailed guilt should do thee shame,
Nor thou with public kindness honour me,
Unless thou take that honour from thy name:
But do not so, I love thee in such sort,
As thou being mine, mine is thy good report.

युगल आकार दोनों का हमें यह मान लेने दो
हमारा प्रेम यह अविभक्त यद्यपि एक-सा रहता,
जहाँ तक कालिमाएँ हैं हमारे साथ रहने दो
बिना तेरी मदद के भी सहन सब दोष कर सकता,
हमारे और तुम्हारे प्रेम में बस बात है इतनी
विषम जीवन बना दे जो धृणा का रूप वह इसमें,
प्रभावित पर न होता प्रेम, उसमें शक्ति ही कितनी,
घटा देती मगर कुछ प्रेम का आनन्द जीवन में,
हमारा है मधुर अधिकार तुमपर क्या जताना है
हमारे दोष गर्हित लाज में डालें नहीं तुमको,
जगत के सामने तुमको न मुझपर रीझ जाना है
न जब तक नाम का आधार अपना दो प्रिये इसको,

मगर ऐसा न करना, रूप यह प्यारा तुम्हारा है
हमारे तुम, तुम्हारे प्रति हमारा भाव न्यारा है ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XXXVII

As a decrepit father

As a decrepit father takes delight
To see his active child do deeds of youth,
So I, made lame by Fortune's dearest spite,
Take all my comfort of thy worth and truth;
For whether beauty, birth, or wealth, or wit,
Or any of these all, or all, or more,
Entitled in thy parts, do crowned sit,
I make my love engrafted to this store:
So then I am not lame, poor, nor despised,
Whilst that this shadow doth such substance give
That I in thy abundance am sufficed,
And by a part of all thy glory live.
Look what is best, that best I wish in thee:
This wish I have; then ten times happy me!

किसी का बाप बूढ़ा हो सुखी ज्यों बात यह सुनकर
कि यश की दुन्दुभी बजती जगत में पुत्र के उसके,
बना मैं पंगु यद्यपि भाग्य के प्रिय द्रोह से कटुतर
सुखी सन्तुष्ट तैरे रूप-गुण के तथ्य गुनगुन कर,
तुम्हारा रूप, गुण, सम्पत्ति या कुलशील हो जितना
सभी एकत्र, कोई एक या होवें अधिक इनसे,
विभूषित रत्न सा प्रति अंग तेरा है सुघर इतना
विवर्द्धित प्यार मेरा और सुख की राशि में सरसे,
कहो तब पंगु मैं कैसे, तिरस्कृत और निर्धन क्या
तुम्हारी मात्र छाया से बने जब तत्वमय कण कण,
मुझे तो प्राप्त है सम्पूर्ण सुधमा-राशि की प्रभुता
तुम्हारा अंश गौरवपूर्ण जब कर दे सुखी जीवन,

हमारी कामना में वस्तु सर्वोत्तम मिले तुमको
रहे जब कामना यह, क्यों न अतुलित सुख मिले हमको

Sonnet-XXXVIII

How can my muse

How can my muse want subject to invent,
While thou dost breathe, that pour'st into my verse
Thine own sweet argument, too excellent
For every vulgar paper to rehearse?
O! give thy self the thanks, if aught in me
Worthy perusal stand against thy sight;
For who's so dumb that cannot write to thee,
When thou thy self dost give invention light?
Be thou the tenth Muse, ten times more in worth
Than those old nine which rhymers invoke;
And he that calls on thee, let him bring forth
Eternal numbers to outlive long date.
If my slight muse do please these curious days,
The pain be mine, but thine shall be the praise.

कहो ऐ शारदे मेरी, विषय नूतन गर्दू मैं क्या
विलसती हो तुम्हीं जब छन्द में रसधार बरसाती,
तुम्हारी उक्ति सर्वोत्तम, तुम्हारी व्यञ्जना अभिधा
रहे क्यों दृष्टि मेरी कागजों पर व्यर्थ टकराती,
तुम्हारे हेरने के योग्य यदि कुछ तत्व हो इनमें
हमारा कुछ नहीं वह श्रेय प्रिय केवल तुम्हारा है,
तुम्हें कुछ क्यों न लिख पाये, अपरिमित शक्ति गूंगें में
तुम्हीं से जब प्रकाशित ज्ञान, अनुसन्धान सारा है,
कला विज्ञान सब तुम शारदा हो दूसरी मेरी
न तुम वह शारदा प्राचीन जो है बैठती तुक में,
मिले वह प्रेरणा उसको करे जो साधना तेरी
अमर हों छन्द उसके, विश्व दे सम्मान युग-युग में,

हमारी शारदे, ये दिन विलक्षण यदि तुम्हें भावे
सभी दुःख दैन्य हों मेरे, तुम्हारा गीत जग गावे।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XXXIX

O! how thy worth

O! how thy worth with manners may I sing,
When thou art all the better part of me?
What can mine own praise to mine own self bring?
And what is't but mine own when I praise thee?
Even for this, let us divided live,
And our dear love lose name of single one,
That by this separation I may give
That due to thee which thou deserv'st alone.
O absence! what a torment wouldst thou prove,
Were it not thy sour leisure gave sweet leave,
To entertain the time with thoughts of love,
Which time and thoughts so sweetly doth deceive,
And that thou teachest how to make one twain,
By praising him here who doth hence remain.

तुम्हारे गुण बखाने, गीत गाये, हम भला कैसे
हमारे अंग हो जब तुम, मधुरतम भाग जीवन के,
प्रशंसा आप अपनी ही निरर्थक कार्य हो जैसे
तुम्हारे गीत ही आधार हैं, जब प्राण के मन के,
अगर यह कार्य है करना, अलग रहना हमें होगा
हमारे प्यार के इस युग्म से होगा विलग कोई,
विरह तुमसे हमारा विश्व को अनुपम स्तन देगा
तुम्हारे रूप के उपयुक्त लड़ियाँ जायँ तब पोई
जुदाई, क्या कहें तेरे सितम क्या जुल्म ढा देते
विरह की यातना विषमय न यदि मधुमय बनाती तू,
तुम्हारे प्यार में कृत-कृत्य हम जीवन बना लेते
विरह औ' प्यार में क्या छल भरी बंसी बजाती तू,

बनें दो, एक कैसे, मर्म यह बतला रही हो तुम
कौं गुणगान हम, जितनी बिछुड़ती जा रही हो तुम !

Sonnet-XL

Take all my loves

Take all my loves, my love, yea take them all;
What hast thou then more than thou hadst before?
No love, my love, that thou mayst true love call;
All mine was thine, before thou hadst this more.
Then, if for my love, thou my love receivest,
I cannot blame thee, for my love thou usest;
But yet be blam'd, if thou thy self deceivest
By wilful taste of what thyself refusest.
I do forgive thy robbery, gentle thief,
Although thou steal thee all my poverty:
And yet, love knows it is a greater grief
To bear love's wrong, than hate's known injury.
Lascivious grace, in whom all ill well shows,
Kill me with spites yet we must not be foes.

हमारा प्यार, पूरा प्यार, प्यारे ! छीन लो हमसे
तुम्हारे पास पहले की अपेक्षा हो गया कितना,
नहीं वह प्यार पाये सत्य की संज्ञा प्रिये, तुमसे
हमारे ही तुम्हारा था, रहा पहले अधिक जितना,
हमारे प्यार के बदले करोगी प्यार मुझसे जब
तुम्हें इस प्यार के व्यवहार का दोषी न मानेंगे,
तुम्हें दोषी कहेंगे तब, करोगी छल स्वयं से जब
अस्वीकृत प्यार स्वेच्छाचार से जब तथ्य जानेंगे,
भुला देंगे उसी क्षण, चोर भोले, की गयी चोरी
हमारी ही अकिंचनता यदपि हमसे चुराओगी,
बड़ी है वेदना जिसमें, समझती पीर मतिभोरी,
करोगी प्यार में छल या धृणा का भाव लाओगी,

रसीली भंगिमा वाली, प्रकट त्रुटियाँ सभी तुममें
धृणा से मार भी डालो, न होगी शत्रुता हममें !





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XLII

That thou hast her

That thou hast her it is not all my grief,
And yet it may be said I loved her dearly;
That she hath thee is of my wailing chief,
A loss in love that touches me more nearly.
Loving offenders thus I will excuse ye:
Thou dost love her, because thou know'st I love her;
And for my sake even so doth she abuse me,
Suffering my friend for my sake to approve her.
If I lose thee, my loss is my love's gain,
And losing her, my friend hath found that loss;
Both find each other, and I lose both twain,
And both for my sake lay on me this cross:
But here's the joy; my friend and I are one;
Sweet flattery! then she loves but me alone.

तुम्हें भी प्यार है उससे, न केवल कष्ट यह मुझको
कहूँगा किन्तु यह जीवन उसी को ही समर्पित है,
मुझे है सालती यह वेदना, वह चाहती तुमको
पराजित प्यार मेरा हो गया, यह दुःख अकल्पित है,
कुटिल ऐ प्रेमियों, मन में नहीं मेरे तितीक्षा है
यद्यपि वह प्यार पर सम्पूर्ण कर अधिकार लेता है,
हमारे प्रति प्रिये ! तेरे हृदय में जो उपेक्षा है
उसी से अन्य प्रेमी लुब्ध तुमपर प्राण देता है,
तुम्हें खोना प्रिये, मृदु प्यार का उपहार पाना है
हमारा मित्र भी खोकर यही परिणाम पायेगा,
बनोगे एक तुम दोनों, मुझे दोनों लुटाना है
तुम्हारा प्यार दोनों का मुझे मूली चढ़ायेगा,

खुशी फिर भी मुझे, वह मित्र, मैं, हम एक से होंगे
नहीं आश्चर्य, तेरे प्राण मेरे में बँध होंगे !

Sonnet-XLIII

When most I wink

When most I wink, then do mine eyes best see,
For all the day they view things unrespected;
But when I sleep, in dreams they look on thee,
And darkly bright, are bright in dark directed.
Then thou, whose shadow shadows doth make bright,
How would thy shadow's form form happy show
To the clear day with thy much clearer light,
When to unseeing eyes thy shade shines so!
How would, I say, mine eyes be blessed made
By looking on thee in the living day,
When in dead night thy fair imperfect shade
Through heavy sleep on sightless eyes doth stay!
All days are nights to see till I see thee,
And nights bright days when dreams do show thee me.

दिवस में दृष्टि पर बल डाल विधिवत् हेरता तुमको
निरर्थक वस्तुएँ कारण उलझती दृष्टि के पथ में,
मगर सोते समय जब स्वप्न में होती मुलभ इनको
चमकती हो तमिस्रा में वही तुम ज्योति के रथ में,
प्रकाशित मात्र छाया से तुम्हारी, विश्व छायाएँ
कहो कैसे सुखद संसार यह छाया बना देती,
दिवस ज्योति तुम्हारी ज्योति से कर दूर बाधाएँ
तुम्हारी छाँह भी जब बन्द पलकें जगमगा देती,
कहूँ कैसे पलक मेरी, यही बरदान पा जाती
तुम्हारे रूप का मधुपान दिन में भी किया करता,
तुम्हारी मंजु छाया मौन निशि में जब उतर आती
मूर्धित निद्रालसित दृग बीच निझर ज्योति का झरता,

तुम्हें जब तक न देखूँ दिन सभी है रात के ऐसे
तुम्हें जब स्वप्न दरसाते, चमकती रात दिन जैसे !





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XLVI

Mine eye and heart

Mine eye and heart are at a mortal war,
How to divide the conquest of thy sight;
Mine eye my heart thy picture's sight would bar,
My heart mine eye the freedom of that right.
My heart doth plead that thou in him dost lie,
A closet never pierced with crystal eyes,
But the defendant doth that plea deny,
And says in him thy fair appearance lies.
To 'cide this title is impannelled
A quest of thoughts, all tenants to the heart;
And by their verdict is determined
The clear eye's moiety, and the dear heart's part:
As thus: mine eye's due is thine outward part,
And my heart's right, thine inward love of heart.

हृदय में औ' नयन में द्वन्द्व गहरे हैं छिड़े ऐसे
तुम्हारे रूप के साम्राज्य का कैसे विभाजन हो,
नयन तुमको हृदय के द्वार पर आने न दें, जैसे
हृदय शासन करे दृग को न तेरा रूप दर्शन हो,
हृदय कहता तुम्हारा बास उर के बीच निश्चित है
जहाँ यह पारदर्शी दृष्टि जाने भी नहीं पाती,
मगर आँखें कहें इस रूप से उर तो अपरिचित है
करे दावा, पुतलियों में मधुर वह मूर्ति मुस्काती !
बिठाया एक पंचायत युगल अधिकार निश्चय को
हृदय के अन्य बाशिन्दे विचारों को बुला भेजा,
मिले उनके प्रमाणों से सके किस भाँति निर्णय हो
नयन का कोर, उर का भाग सब सुस्पष्ट कर देखा,

नयन में बास तेरे रूप के आकार का सुन्दर
हृदय में बास तेरे प्रिय हृदय के प्यार का मृदुतर !

Sonnet-XLVII

Betwixt mine eye and heart

Betwixt mine eye and heart a league is took,
And each doth good turns now unto the other:
When that mine eye is famish'd for a look,
Or heart in love with sighs himself doth smother,
With my love's picture then my eye doth feast,
And to the painted banquet bids my heart;
Another time mine eye is my heart's guest,
And in his thoughts of love doth share a part:
So, either by thy picture or my love,
Thy self away, art present still with me;
For thou not farther than my thoughts canst move,
And I am still with them, and they with thee;
Or, if they sleep, thy picture in my sight
Awakes my heart, to heart's and eyes' delight.

हृदय के औ' नयन के बीच अद्भुत संगठन ऐसा
परस्पर प्रेम औ' सद्भाव का व्यवहार चलता है,
हमारी एक चितवन को तरसता जब नयन प्यारा
विरह में तब हृदय आँखें भरे, तड़पे, सिसकता है,
नयन जब प्यार से मृदु रूप की झाँकी सजाता है
बड़े सम्मान से प्रिय भोज में उर को बुला लाता,
किसी क्षण नयन बन पाहुन, हृदय के द्वार जाता है
बैठाकर प्यार का कुछ भाग अपने साथ ले आता,
सहारा रूप का हो या तुम्हारे प्यार का आश्रय
हमारे साथ ही होगी प्रिये ! तुम तो सदा प्रतिक्षण,
हमारी कल्पना से दूर जा सकती न तुम निश्चय
तुम्हारी कल्पना में हम, हमारी कल्पना में तुम,

कहीं जो आँख लग जाये पलक में जगमगाओगी
हृदय को औ' नयन को प्यार से पुलकित बनाओगी ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XLVIII

How careful was I

How careful was I when I took my way,
Each trifle under truest bars to thrust,
That to my use it might unused stay
From hands of falsehood, in sure wards of trust!
But thou, to whom my jewels trifles are,
Most worthy comfort, now my greatest grief,
Thou best of dearest, and mine only care,
Art left the prey of every vulgar thief.
Thee have I not locked up in any chest,
Save where thou art not, though I feel thou art,
Within the gentle closure of my breast,
From whence at pleasure thou mayst come and part;
And even thence thou wilt be stol'n I fear,
For truth proves thievish for a prize so dear.

विदा होते समय था व्यस्त कितना सावधानी में
लगाया क्षुद्र से भी क्षुद्र चीजों पर कठिन ताला,
कि मेरे काम के लायक रहे ताजी खानी में
बचाने को फरेबी से किला सब का बना डाला,
मगर तू है कि मेरे रत्न तेरे वास्ते कंकर
मिलेगा चैन, यह ग्वाहिश, बड़े गम की कहानी है,
हमारे वस्तु प्रियतम, एक चिन्ता, एक ही कारण
लुटेरों के इशारों पर तुम्हारी जिन्दगानी है,
नहीं मैंने तुम्हें सन्दूक में कर बन्द रखना है
जहाँ तुम हो नहीं, यद्यपि नहीं एतबार है मुझको,
हृदय के प्रेम-बन्धन में मधुर तेरी व्यवस्था है
रहो इच्छा, चली जाओ जहाँ, जैसी खुशी तुमको,

यहाँ भी ऐ प्रिये, दुनिया तुम्हें रहने नहीं देगी
मधुर तुम वस्तु जैसी हो, सच्चाई भी चुरा लेगी !

Sonnet-L

How heavy do I journey

How heavy do I journey on the way,
When what I seek, my weary travel's end,
Doth teach that ease and that repose to say,
'Thus far the miles are measured from thy friend!'
The beast that bears me, tired with my woe,
Plods dully on, to bear that weight in me,
As if by some instinct the wretch did know
His rider lov'd not speed being made from thee.
The bloody spur cannot provoke him on,
That sometimes anger thrusts into his hide,
Which heavily he answers with a groan,
More sharp to me than spurring to his side;
For that same groan doth put this in my mind,
My grief lies onward, and my joy behind.

चढ़ूँ मंजिल कहां कैसे बकित हूँ, भारयुत कितना
सफर यह कष्ट का जिसके लिये है जब वही कहता,
उसी आराम से, सुख-शान्ति से जो चल चुका इतना
'यहाँ तक दूर प्रिय से आ गया तू मार्ग तय करता,
मुझे जो दो रहा है पशु, दुखों से गया मेरे
थिथिल पग, हाँफता चलता, लिये जो वेदना मुझमें,
प्रकृति की प्रेरणा से ज्यों अभागा जानता हैरे !
सवारी गति न वह चाहे बना दे दूर जो तुमसे,
लगाता ऍड़ हूँ कसकर, असर कुछ भी नहीं होता
कभी जब क्रोध से करता प्रताड़ित चर्म को उसके,
बड़ी ही खीझ से गुरा उठे मुझपर जिसे होता
उसी क्रम से जमाता ऍड़ जैसे देह में कसके,

गरजती वेदना उसकी यही मन पर चढ़ी आती
दुखों की राह आगे औ' खुशी पीछे बड़ी जाती ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LI

Thus can my love excuse

Thus can my love excuse the slow offence
Of my dull bearer when from thee I speed:
From where thou art why should I haste me thence?
Till I return, of posting is no need.
O! what excuse will my poor beast then find,
When swift extremity can seem but slow?
Then should I spur, though mounted on the wind,
In winged speed no motion shall I know,
Then can no horse with my desire keep pace.
Therefore desire, (of perfect'st love being made)
Shall neigh, no dull flesh, in his fiery race;
But love, for love, thus shall excuse my jade-
Since from thee going, he went wilful-slow,
Towards thee I'll run, and give him leave to go.

हमारा प्यार कर सकता क्षमा क्या मन्द जड़ता को
कि तुमसे दूर ले जाये, न इतनी शक्ति है पशु में,
जहाँ तुम हो वहाँ से ले चले क्या शीघ्रता इसको
न आये लौटकर जबतक, रुकावट क्या भला पथ में,
विचारा पशु, कहो, तब कौन-सा कारण बतायेगा
लगे द्रुत छोर सौमाहीन जब गतिहीन-सा सारा,
हवा पर मन भले हो, ऐंड पिफर भी क्या लगायेगा
पखेरु-वायु भी गतिहीन, दुर्बल दीन बेचारा !
हमारी कामना का भार ढोये पशु कहो, कैसे
हमें सम्पूर्ण विधि परिपूर्ण केवल प्यार मन भाये,
कराहे क्यों न पीड़ा से, न क्यों लाचार हो ऐसे
मगर जब प्यार है तो प्यार अड़ियल को न ठुकराये,

अलग तुमसे चले तो चल न पाये एक पग भी जब
इसे दूँ छोड़ तेरे पास दौड़ा क्यों न आऊँ तब ।

Sonnet-LII

So am I as the rich

So am I as the rich, whose blessed key,
Can bring him to his sweet up-locked treasure,
The which he will not every hour survey,
For blunting the fine point of seldom pleasure.
Therefore are feasts so solemn and so rare,
Since, seldom coming in the long year set,
Like stones of worth they thinly placed are,
Or captain jewels in the carcanet.
So is the time that keeps you as my chest,
Or as the wardrobe which the robe doth hide,
To make some special instant special-blest,
By new unfolding his imprisoned pride.
Blessed are you whose worthiness gives scope,
Being had, to triumph, being lacked, to hope.

लिये कुंजी सुभागी मैं बड़ा सम्पत्तिशाली हूँ
खजाना बन्द इच्छा मात्र से जो खोल दे पल में,
न निगरानी करे प्रतिक्षण बड़ा वह भाग्यशाली हूँ
सुदुर्लभतम प्रखर आनंद होता कम न जीवन में,
न सस्ती दावतें जिसकी कभी हों, तो करीने से
वजह यह है कि वर्षों में कभी आती घड़ी ऐसी,
सजे जो पंक्तियाँ बहुमूल्य हों और नगीने से
नहीं तो बंद आभूषण लिये हो पेटिका जैसी,
समय के पास मेरी पेटिका जैसी सुरक्षित तुम
सजे वस्त्रालयों-सी तुम अनेकों वस्त्र हों जिनमें,
किन्हीं अवसर विशेषों पर विभूषित हो उठें ज्यों हम
नयी तह खोलकर जैसे भरा अभिमान हो इनमें,

कहें क्या खुशानीसीबी हम तुम्हारी तुम सखुन जितनी
तुम्हें पाकर विजय खोकर तुम्हें आशा बदे उतनी !





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LIII

What is your substance

What is your substance, whereof are you made,
That millions of strange shadows on you tend?
Since every one hath, every one, one shade,
And you but one, can every shadow lend.
Describe Adonis, and the counterfeit
Is poorly imitated after you;
On Helen's cheek all art of beauty set,
And you in Grecian tires are painted new:
Speak of the spring, and foison of the year,
The one doth shadow of your beauty show,
The other as your bounty doth appear;
And you in every blessed shape we know.
In all external grace you have some part,
But you like none, none you, for constant heart.

कहो क्या तत्व है जिनसे हुआ निर्माण यह तेरा
तुम्हारा अनुसरण करती सहस्रों कोटि छायायें,
मिला प्रत्येक को प्रतिरूप केवल एक ही घेरा
मगर तुम एक, केवल एक, सबपर हो सतत छाये,
कहाँ गुणगान क्या, 'एडोनिस्' लगे फाँका, लगे बिखरा
बड़ी कृत्रिम तुम्हारे रूप की अनुकृति विचारी है,
कपोलों पर हेलेन के जो कला का रंग प्रिय निखरा
युनानी चित्रकारी में तुम्हारी चित्रकारी है,
कहाँ मौसम बहारों का कि मौसम हो फसल के तुम
प्रथम इनमें प्रकट करता तुम्हारे रूप को सुन्दर,
बताता दूसरा तेरे हृदय की भावना अनुपम
तुम्हारा बोध हमको किन्तु सब प्रतिरूप में सुखकर,

सभी इन वाह्य रूपों में किसी भी अंश में तुम हो
न तुम सा अन्य, पूर्ण अनन्य, शाश्वत रूप चिन्मय हो।

Sonnet-LIV

O! how much more

O! how much more doth beauty beauteous seem
By that sweet ornament which truth doth give.
The rose looks fair, but fairer we it deem
For that sweet odour, which doth in it live.
The canker blooms have full as deep a dye
As the perfumed tincture of the roses,
Hang on such thorns, and play as wantonly
When summer's breath their masked buds discloses:
But, for their virtue only is their show,
They live unwoo'd, and unrespected fade;
Die to themselves. Sweet roses do not so;
Of their sweet deaths are sweetest odours made:
And so of you, beauteous and lovely youth,
When that shall vade, my verse distills your truth.

अहो सौन्दर्य का सौन्दर्य तब कितना निखर जाता
पहनकर सत्य का भूषण जगत को जगमगाता जब,
बड़ा हो प्रिय गुलाब, अनिन्द्य, प्रियतर और तब लगता
सुवासित गन्ध से उसकी निखिल उपवन महकता जब,
बहुत से फूल खिलते हैं, रंगीले और चटकीले
गुलाबों के सुवासित और चटकीले पटल जैसे,
बसन्ती वायु कलियों के उठा धुँधट नयन खोले
खिलें वे कण्ठकों में या रहें वे होलते ऐसे,
प्रदर्शन मात्रा गुन उनका, निरर्थक सब रंगीलापन
न पूछे बात मन्द अलिन्द अनजाने मुरझ जाते,
मैं वे आप अपने में, गुलाबों का न यह जीवन
गमकते अन्त के उपरान्त भी सुरभित किये जाते,

मनोहर औ' मधुर यौवन कभी जब रीत जायगा
हमारे छन्द में यह तब्य छनकर और आयेगा।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LV

Not marble, nor

Not marble, nor the gilded monuments
Of princes, shall outlive this powerful rhyme;
But you shall shine more bright in these contents
Than unswept stone, besmear'd with sluttish time.
When wasteful war shall statues overturn,
And broils root out the work of masonry,
Nor Mars his sword, nor war's quick fire shall burn
The living record of your memory.
'Gainst death, and all oblivious enmity
Shall you pace forth; your praise shall still find room
Even in the eyes of all posterity
That wear this world out to the ending doom.
So, till the judgment that yourself arise,
You live in this, and dwell in lovers' eyes.

बनें स्मारक स्फटिक के या चढ़ाकर स्वर्ण का पानी-
नरेशों के, न मेरे छन्द से स्थायी अधिक होंगे,
रहेगी गुँजती इनमें तुम्हारी ज्योति की बानी
समय के गर्त में विस्मृत पड़े वे दूह से होंगे,
विनाशक यद्ध सारी मूर्तियों को जब मिटा देंगे
नमूने राजगीरों के पटेंगे एक हलचल में,
भयंकर युद्ध या शैतान दुनिया को हिला देंगे
तुम्हारा किन्तु यह स्मारक सदा जीवित युगानल में,
मरण से और विस्मृति से सदा आगे रहोगी तुम
भुलायेगी नहीं दुनिया तुम्हारा गीत गौरव का,
नजर में पीढ़ियों की तुम रहोगी सर्वथा अनुपम
पहुँचता है प्रलय के द्वार तक यह कारवाँ गिनका,

अतः निर्णय दिवस तक जो उदित होगा तुम्ही से ही
बसो इस छन्द में औ' प्रेमियों की भावना में ही।

Sonnet-LVI

Sweet love, renew

Sweet love, renew thy force; be it not said
Thy edge should blunter be than appetite,
Which but to-day by feeding is allayed,
To-morrow sharpened in his former might:
So, love, be thou, although to-day thou fill
Thy hungry eyes, even till they wink with fulness,
To-morrow see again, and do not kill
The spirit of love, with a perpetual dulness.
Let this sad interim like the ocean be
Which parts the shore, where two contracted new
Come daily to the banks, that when they see
Return of love, more blest may be the view;
As call it winter, which being full of care,
Makes summer's welcome, thrice more wished,
more rare.

मधुर ऐ प्रेम, अपनी शक्ति का नव संघटन कर ले
मधुरता से अधिक अनृप्ति है, कोई बताये ना,
मुड़ाई धार हो यदि आज तेरी प्यार से मेरे
छूरी पर सान तू कल के लिये फिर से चढ़ा लेना
रहो इस भाँति प्रियतम सर्वदा भूखे नयन प्रतिक्षण
छलकते प्यार से यद्यपि भरे हैं आज ये प्याले,
यही हो दृष्टि मधुरिम प्यार से जब कल निहारो तुम
न लेकिन एकरसता प्यार को नीरस बना डाले
अवस्था मध्य की अग्रिय, भले सागर सदृश होवे
किनारों पर जहाँ दो प्रेम प्यासे नित्य आते हैं,
विकल दो प्राण अपने प्रेमियों को देख जब लेवें
मधुर स्वर्गिक मुखद प्रिय प्रेम का प्रतिदान पाते हैं,

नहीं तो शीत सा कटुतम ग्रसित जो वेदनाओं से
भरा जिसका हृदय केवल वसन्ती कल्पनाओं से।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LVII

Being your slave

Being your slave what should I do but tend
Upon the hours, and times of your desire?
I have no precious time at all to spend;
Nor services to do, till you require.
Nor dare I chide the world without end hour,
Whilst I, my sovereign, watch the clock for you,
Nor think the bitterness of absence sour,
When you have bid your servant once adieu;
Nor dare I question with my jealous thought
Where you may be, or your affairs suppose,
But, like a sad slave, stay and think of nought
Save, where you are, how happy you make those.
So true a fool is love, that in your will,
Though you do anything, he thinks no ill.

तुम्हारी चाकरी को छोड़ मेरा क्या गुजारा है
रहूँ मैं सेवकाई में तुम्हारी हर घड़ी जयत,
समय का मूल्य क्या मेरे लिये, जो है तुम्हारा है
कसूँ मैं काम भी वह कौन जो चाहो नहीं जब तक,
समय-निस्सीम-जग, साहस नहीं जो हो सकूँ विचलित
प्रतीक्षा में, प्रभो, मैं बाट जोहूँ हर घड़ी तेरी,
न अनुभव कर सकूँ कितनी विषम कटुतिवत अनुपस्थिति
गये जब से यहाँ से सौंप कर वह चाकरी मेरी,
न कर पाऊँ कभी सन्देह ईर्ष्यायुत विचारों में
कहाँ तुम, किस परिस्थिति में, पड़े कैसी अवस्था में
इधर मैं दीन सेवक भाँति खोया निर्विकारों में
सुखी हूँ जब सुखी वह स्थल तुम्हारी प्रिय व्यवस्था में,

अरे, यह प्रेम कितना सत्य भोला जो न यह जाने,
करो जो भी तुम्हें भाये, बुरा कुछ भी नहीं माने।

Sonnet-LVIII

That god forbid

That god forbid, that made me first your slave,
I should in thought control your times of pleasure,
Or at your hand the account of hours to crave,
Being your vassal, bound to stay your leisure!
O! let me suffer, being at your beck,
The imprison'd absence of your liberty;
And patience, tame to sufferance, bide each check,
Without accusing you of injury.
Be where you list, your charter is so strong
That you yourself may privilege your time
To what you will; to you it doth belong
Yourself to pardon of self-doing crime.
I am to wait, though waiting so be hell,
Not blame your pleasure be it ill or well.

बनाया दास जिस विभु ने प्रकट आदेश उसका है
कि मैं बाधा नहीं डालूँ तुम्हारे मोद के क्षण में,
तुम्हारा प्यार पाने के लिए अनुचित तड़पना है
बना हूँ दास तो बँधकर रहूँ चुपचाप बन्धन में,
तुम्हारे इंगितों पर जब मुझे यह पीर सहने दो
बँधा जो प्यार की उन्मुक्तता का प्रिय वियोगी क्षण,
हमारी धीरता अभ्यस्त सब प्रतिबन्ध सहने को
बिना आरोप के तुम पर, किये जिस भाँति गहरे व्रण,
जहाँ हो खुश रहो, अधिकार तुमको हैं मिले व्यापक
स्वयं अपने समय के तुम यथा इच्छा नियामक हो,
करो जोभी अभीप्सित हो, तुम्हारा है समय पायक
क्षमा कर लो स्वतः अपराध निज ऐसे विधायक हो।

प्रतीक्षा है मुझे करनी, प्रतीक्षा यह यदपि रौरव
बुरी हो या भली, तेरी खुशी, मेरे लिए गौरव।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LIX

If there be nothing new

If there be nothing new, but that which is
Hath been before, how are our brains beguil'd,
Which labouring for invention bear amiss
The second burthen of a former child.
Oh that record could with a backward look,
Even of five hundred courses of the sun,
Show me your image in some antique book,
Since mind at first in character was done,
That I might see what the old world could say
To this composed wonder of your frame;
Whether we are mended, or where better they,
Or whether revolution be the same.
Oh sure I am the wits of former days,
To subjects worse have given admiring praise.

नया यदि है नहीं कुछ भी, प्रथम जो था वही अब भी
कहो मस्तिष्क हम सबका लगाये किस लिए फेरा,
परिश्रम साध्य नव उपलब्धि, यदि है वस्तु पहली सी
मिले जो भार बनकर दूसरा अभिजात भी मेरा,
घुमाकर दृष्टि पीछे को पुरानी पोथियां उलटें
सहस्रों सूर्य के पथ से मुँदे, पीछे चलें यदि हम,
दिखाओ रूप अपना तुम किसी में, हम उसे निरखें
प्रथम की मानवी परिकल्पना में थीं बनी जब तुम,
मुझे भी ज्ञात हो प्राचीन जग ने रूप क्या जाना
तुम्हारे इस विलक्षण रूप की अनुभूति थी कितनी,
अपेक्षाकृत मला है, कौन जाए श्रेष्ठतर माना
कि चलती ही रहे वह बात अपने आप थी जितनी,

नहीं सन्देह इसमें, दिन पुराने गा चुके जितने
विषय जो हीनतर थे वे उन्हें कुछ भा गये इतने।

Sonnet-LX

Like as the waves

Like as the waves make towards the pebbled shore,
So do our minutes hasten to their end;
Each changing place with that which goes before,
In sequent toil all forwards do contend.
Nativity, once in the main of light,
Crawls to maturity, wherewith being crown'd,
Crooked eclipses 'gainst his glory fight,
And Time that gave doth now his gift confound.
Time doth transfix the flourish set on youth
And delves the parallels in beauty's brow,
Feeds on the rarities of nature's truth,
And nothing stands but for his scythe to mow:
And yet to times in hope, my verse shall stand
Praising thy worth, despite his cruel hand.

तरंगें जिस तरह टकराएँ चट्टानी किनारों से
हमारे दिन इसी क्रम से निरन्तर बीतते जाते,
बदलती जायें थल प्रति थल प्रथम की रिक्त धारों से
निरन्तर लड़-झगड़ कर दिन इसी क्रम से बढ़े जाते,
प्रथम आवास जिनका ज्योति के गहरे महौदधि में
वही पड़ काल के क्रम में मुकुट पहने जवानी में,
खड़े गौरव शिखर पर जब पड़े वंकिम परिस्थिति में
उसी को काल उलझाये दिया था जो निशानी में,
उभरते फूलते फलते तरुण लावण्य विकृत कर
समय उस रूप में गड़हे समानान्तर बना देता,
प्रकृति के तथ्य जो अनमोल लेता है उदर में भर
न बचता शेष हँसिया छोड़, फसलें काट सब लेता,

समय के सामने आशा भरे ये छन्द हैं मेरे
करारे बार हों उसके, करें गुणगान ये तेरे





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LXI

Is it thy will

Is it thy will, thy image should keep open
My heavy eyelids to the weary night?
Dost thou desire my slumbers should be broken,
While shadows like to thee do mock my sight?
Is it thy spirit that thou send'st from thee
So far from home into my deeds to pry,
To find out shames and idle hours in me,
The scope and tenor of thy jealousy?
O, no! thy love, though much, is not so great:
It is my love that keeps mine eye awake:
Mine own true love that doth my rest defeat,
To play the watchman ever for thy sake:
For thee watch I, whilst thou dost wake elsewhere,
From me far off, with others all too near.

यही क्या कामना प्रियतम, बकी यह रात रह जाये
उनींदी आँख को खोले रहे तेरी मधुर छाया,
यही क्या चाहती हो नींद आने ही नहीं पाये
तुम्हारे रूप के आकार ठगते ही रहें, आ, आ !
यही क्या है उचित इनको पठा दो दूर घर से तुम
हमारे कारनामों का पता या भेद लेने को,
हमारे दोष क्या क्या हैं, समय कैसे खपाते हम
स्वयं के भाव ईर्ष्यायुत अधिक दृढ़तर बनाने को !
तुम्हें है प्यार मुझसे पर अधिक वह है नहीं ऐसा
हमारा प्यार है जो टकटकी दृग में लगाये है,
हमारा प्यार हमको है किये बेचैन के जैसा
तुम्हारे सज्ज पदों पर वही हमको बिठाये है !

प्रिये, जागो कहीं तुम और मैं पहरा यहाँ दूँगा
लगे तुम गैर के दिल से, सहन चुपचाप कर लूँगा ।

Sonnet-LXII

Sin of self-love

Sin of self-love possesseth all mine eye
And all my soul, and all my every part;
And for this sin there is no remedy,
It is so grounded inward in my heart.
Methinks no face so gracious is as mine,
No shape so true, no truth of such account;
And for myself mine own worth do define,
As I all other in all worths surmount.
But when my glass shows me myself indeed
Beated and chopp'd with tanned antiquity,
Mine own self-love quite contrary I read;
Self so self-loving were iniquity.
'Tis thee, myself, that for myself I praise,
Painting my age with beauty of thy days.

स्वयं के प्यार के अपराध के भागी नयन में
हृदय में, प्राण में, प्रतिरोम में यह भाव व्यापा है,
रहे मत दोष ये मुझमें, नहीं उपचार कोईरे
जमा इस भाँति उर के देश पर अधिकार उसका है,
नहीं है रूप सुन्दर अन्य में रूप के जैसा
न आकृति पूर्ण इतनी, भाव भी सच्चे नहीं इतने,
न अपने गुण सदृश लक्षण कहीं अन्यत्रा है ऐसा
भली विधि पूर्ण बड़-बड़कर सभीसे योग्य गुण जितने,
मगर जब आइने में रूप देखूँ दरअसल अपना
विकृत, जर्जर, सिझाया, मार खाया सा जमाने से,
स्वयं का प्यार अपने आप से विपरीत है कितना
स्वयं से यह स्वयं का मोह, क्या सुझे सुझाने से,

तुम्हीं वह रूप प्रिय मेरा तुम्हें जो प्यार करता हूँ
तुम्हारे रंग से अपने दिनों में रंग भरता हूँ ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LXIII

Against my love

Against my love shall be as I am now,
With Time's injurious hand crushed and o'erworn;
When hours have drained his blood and filled his brow
With lines and wrinkles; when his youthful morn
Hath travelled on to age's steepy night;
And all those beauties whereof now he's king
Are vanishing, or vanished out of sight,
Stealing away the treasure of his spring;
For such a time do I now fortify
Against confounding age's cruel knife,
That he shall never cut from memory
My sweet love's beauty, though my lover's life:
His beauty shall in these black lines be seen,
And they shall live, and he in them still green.

अचल निष्ठा रहेगी प्यार के प्रति आज ही जैसी
समय के निटुर घातक वार में वह पिस उठेगा जब,
समय की क्रूर जिह्वा रुधिर उसका चाट जब लेगी
सुकोमल गाल पर उसके लकीरें खींच दे वह जब,
जवानी का सबेरा उम्र की जब रात तब करले
अतुल सौन्दर्य का वैभव बना सम्राट वह जिसका,
उड़ा कर्पूर जैसा और उड़ता जाय पल पल
बहारों का खजाना पूर्ण अपहृत दे बना उसका,
उसी ऐसे कठिन दिन की किलेबन्दी रहा मैं कर
युगों की इस निटुर चलती धुरी के प्रति सजगता है,
न भूले युग उसे यद्यपि उसी का अन्त डाले कर
हमारे प्रेम के सौन्दर्य की शाश्वत महत्ता है,

हमारी पंक्तियाँ काली वही झाँकी दिखायेंगी
अमर इन पंक्तियों में वह युगों तक मुस्करायेगी ।

Sonnet-LXIV

When I have seen

When I have seen by Time's fell hand defaced
The rich proud cost of outworn buried age;
When sometime lofty towers I see down-razed,
And brass eternal slave to mortal rage;
When I have seen the hungry ocean gain
Advantage on the kingdom of the shore,
And the firm soil win of the watery main,
Increasing store with loss, and loss with store;
When I have seen such interchange of state,
Or state itself confounded to decay;
Ruin hath taught me thus to ruminare
That Time will come and take my love away.
This thought is as a death which cannot choose
But weep to have that which it fears to lose.

बड़ा अभिमान अपने आप पर था जिन बहारों को
समय के क्रूर हाथों ने उसे पल में मिटा डाला,
उठायी दृढ़ दिवारों को, गगनचुम्बी सितारों को
धराशायी किया औ' पीसकर चूरा बना डाला,
क्षुधतुर सिन्धु बाहों में लपेटे हैं किनारों को
कुदरती आग पानी का युगों से खेल देखा है,
धरा ने सिन्धु से कैसे सम्भाला है कगारों को
युगों से ध्वंस से निर्माण का यह खेल देखा है,
समय के सामने संसार को जब सिर झुकाना है
विदित है तब तब निर्माण कोई रह न पायेगा,
हृदय में है उठी आँधी भयंकर, क्या ठिकाना है
कहो, यह काल मेरा प्यार भी क्या लूट जायेगा,

यही है मृत्यु जिस पर कुछ विचारा जा नहीं सकता
रहूँ रोता उसे लेकर जिसे मैं पा नहीं सकता ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LXV

Since brass, nor stone

Since brass, nor stone, nor earth, nor boundless sea,
But sad mortality o'ersways their power,
How with this rage shall beauty hold a plea,
Whose action is no stronger than a flower?
O! how shall summer's honey breath hold out,
Against the wrackful siege of battering days,
When rocks impregnable are not so stout,
Nor gates of steel so strong but Time decays?
O fearful meditation! where, alack,
Shall Time's best jewel from Time's chest lie hid?
Or what strong hand can hold his swift foot back?
Or who his spoil of beauty can forbid?
O! none, unless this miracle have might,
That in black ink my love may still shine bright.

अगम सागर धरा पाषाण पीतल में न जब क्षमता
सबके जो रोक पलभर भी नियति की मार को निष्ठुर,
नियति के रोष के सम्मुख टिके किस भाँति सुन्दरता
न जिसमें सार है कोई सुमन की शक्ति से बढ़कर,
बली मधुभार से लदकर सुगन्धित वायु वासन्ती
उगलती आग मैख नाद करती आ रही आँधी,
समय की क्रूरता के सामने क्या वस्तु रसवन्ती
न चट्टानें, न लोहे की दीवारें, जब गयी बाँधी,
अरी ओ कल्पने भीषण, बतादे युक्ति वह जैसे
नियति के गाँज से यह धन नियति का जो छिपा लेता,
बता दे काल के द्रुत पाँव बाँधे जायेंगे कैसे
समय के घात से सौन्दर्य को कोई बचा लेता,

सिवा इस एक जादू के नहीं कोई असर होगा
चमकता प्यार मेरा कृष्ण वर्णों में जमर होगा ।

Sonnet-LXVI

Tired with all these

Tired with all these, for restful death I cry,
As to behold desert a beggar born,
And needy nothing trimm'd in jollity,
And purest faith unhappily forsworn,
And gilded honour shamefully misplaced,
And maiden virtue rudely strumpeted,
And right perfection wrongfully disgraced,
And strength by limping sway disabled,
And art made tongue-tied by authority,
And folly, doctor-like, controlling skill,
And simple truth miscalled simplicity,
And captive good attending captain ill:
Tired with all these, from these would I be gone,
Save that, to die, I leave my love alone.

न कोई अन्त ऐ दुनिया तुम्हारी नीचताओं का
इसी से शान्तिदायी मृत्यु को गुहरा रहा हूँ मैं,
किसी कंगाल कन्या सी निरर्थक घर अभावों का
अधमता पर तुम्हारी अश्रुकण बरसा रहा हूँ मैं,
उड़ा देती हँसी में ही किसी की बात आवश्यक
किसी श्रद्धालु पर आक्षेप और सम्मान पर धावा,
कुँआरी भावना के शील का अपहरण कटु घातक
उचित परिपूर्ण पर अनुचित कलंकित क्षुद्रतम दावा
जहाँ लँगड़ी हुकूमत शक्ति को ही पंगु कर डाले
जहाँ प्रभुता बला की जीम धर कर खींच लेती हो,
जहाँ पर सत्य भोलापन, लगे सदपर जहाँ ताले
जहाँ पर मूर्खता ही ज्ञान को उपदेश देती हो,

गया हूँ ऊब इनसे, दूर रहना चाहता हूँ मैं
अकेला प्यार जग में छोड़ मरना चाहता हूँ मैं ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LXXI

No longer mourn

No longer mourn for me when I am dead
Than you shall hear the surly sullen bell
Give warning to the world that I am fled
From this vile world with vilest worms to dwell:
Nay, if you read this line, remember not
The hand that writ it, for I love you so,
That I in your sweet thoughts would be forgot,
If thinking on me then should make you woe.
O! if, I say, you look upon this verse,
When I perhaps compounded am with clay,
Do not so much as my poor name rehearse;
But let your love even with my life decay;
Lest the wise world should look into your moan,
And mock you with me after I am gone.

जमाने से उठेगी जब तुम्हारे प्यार की अस्थी
खबर सुनकर हमारी मौत की हरगिज न रोना तुम,
गया मैं भाग दुनिया से भगोड़ों में हुई भरती
उड़ायेगी हँसी संसार पर धीरज न खोना तुम
अधम संसार से हटकर गयी मिल खाक में हस्ती
इसी के प्यार को अपने मलिन होने नहीं देना,
कभी गाते हुए इस छन्द को आ जाए यदि मस्ती
हमारा नाम भी सुकुमार होठों में नहीं लेना,
हमारी याद आ आकर तुम्हें जिस क्षण रुलायेगी
तुम अपने प्यार में मुझको कहो कैसे बसाओगी
मिला जो पंचभूतों में उसे तड़पन सतायेगी
उसे होगा दुसह दुख यदि कहीं आँसू गिराओगी

हमारा प्यार तुमको बाद में भूल जाना है
इधर आँसू बरसते हैं, उधर हँसता जमाना है।

Sonnet-LXXII

O! lest the world should

O! lest the world should task you to recite
What merit lived in me, that you should love
After my death,—dear love, forget me quite,
For you in me can nothing worthy prove.
Unless you would devise some virtuous lie,
To do more for me than mine own desert,
And hang more praise upon deceased I
Than niggard truth would willingly impart:
O! lest your true love may seem false in this
That you for love speak well of me untrue,
My name be buried where my body is,
And live no more to shame nor me nor you.
For I am shamed by that which I bring forth,
And so should you, to love things nothing worth.

कहो क्या बात है, इतना उसे जो याद करती हो
हमारे बाद यदि पूछे जमाना, क्या बतावोगी,
मुझे ऐं बाद की दुनियाँ, कृपा आबाद करती हो
न हो जब पात्रता तब सिद्ध करके क्या दिखाओगी,
गढ़ेगी बात कितनी कल्पना ऊँचे उठावेगी
न जिसके योग्य हूँ उसके लिये क्यों व्यर्थ हैरानी,
भरेगी रिक्तता कितनी कृपा कितना सम्हालेगी
गये बीते जमाने पर बढ़ाकर स्वर्ण का पानी,
तुम्हारा भाव सच्चा किन्तु जग लांछन लगावेगा
'किसी के प्यार में झूठी प्रशंसा है', कहेगा वह,
हमारे साथ ही तुम पर निदुर उँगली उठावेगा
मिटा दो नाम शव के साथ ही अच्छा रहेगा वह,

मुझे है ग्लानि अपने आप पर मैंने किया जो भी
अकिंचन प्यार से मेरे, मिलेगी मुक्ति तुमको भी।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LXXIII

That time of year

That time of year thou mayst in me behold
When yellow leaves, or none, or few, do hang
Upon those boughs which shake against the cold,
Bare ruined choirs, where late the sweet birds sang.
In me thou see'st the twilight of such day
As after sunset fadeth in the west;
Which by and by black night doth take away,
Death's second self, that seals up all in rest.
In me thou see'st the glowing of such fire,
That on the ashes of his youth doth lie,
As the death-bed, whereon it must expire,
Consumed with that which it was nourish'd by.
This thou perceiv'st, which makes thy love more strong,
To love that well, which thou must leave ere long.

ठिठुरकर शीत से एक आध तरु के पात पीले जो
रहे हैं झूल डालीपर, रही जो काँप थर-थर-थर,
रहे हो दूँद तुम मुझमें उसी युग के रंगीले को
जहाँ हैं गा चुके पंछी, हुआ है भग्न कलरव स्वर,
गया जब डूब दिनकर आ गयी गोधूलि की बेला
गयी लेकर जिसे अनजान काली रात बहलाकर,
स्वयं ज्यों मृत्यु ने आकर किया हो बन्द सब मेला
रहे हो दूँद तुम मुझमें वही रस-रंग पछताकर,
जवानी की चिता की राख में चिनगारियाँ दहकें
पचाया मृत्युशय्या ने उसी को थी पली जिससे,
जवानी सो गयी चुपचाप आँखें रह गयीं खुलके
उन्हीं चिनगारियों की लौ रहे हो दूँद तुम मुझमें.

उसे तुम दूँदते जितना अधिक उतना मचलते हो
जिसे अब भूलना बेहतर उसी को प्यार करते हो।

Sonnet-LXXIV

But be contented

But be contented when that fell arrest
Without all bail shall carry me away,
My life hath in this line some interest,
Which for memorial still with thee shall stay.
When thou reviewest this, thou dost review
The very part was consecrate to thee:
The earth can have but earth, which is his due;
My spirit is thine, the better part of me:
So then thou hast but lost the dregs of life,
The prey of worms, my body being dead;
The coward conquest of a wretch's knife,
Too base of thee to be remembered.
The worth of that is that which it contains,
And that is this, and this with thee remains.

मुझे जब बाँधकर लेकर चलेगी मौत मतवाली
रिहाई के लिए कोई जमानत हो न पायेगी,
तुम्हें सन्तोष होगा पंक्तियाँ हैं ये नहीं खाली
अचल सम्पत्ति स्मृतियों की मृदुल रह शेष जायेगी,
न कोई अंश है ऐसा समर्पित जो नहीं तुमको
विदित हो जायेगी यह बात जब इनको निहारोगी,
रही जो चाह दुनिया वस्तु वह मिल जायेगी इसको
प्रिये, इन पंक्तियों का प्राण अपने में उतारोगी,
मरूँगा, भोग कीटों का बनेगा जब हमारा शव
अभागिन मृत्यु की काली विजय का डब यही होगा,
अधम इस अन्त पर अरमान क्या होगा तुम्हारा तब
तुम्हें बस हानि, अनुभव इन विकारों का नहीं होगा,

सुरक्षित पंक्तियों में इन, अगर कुछ तत्व जीवन में
कहीं अस्तित्व यदि इनका, तुम्हारी एक चितवन में।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LXXV

So are you to my thoughts

So are you to my thoughts as food to life,
Or as sweet-season'd showers are to the ground;
And for the peace of you I hold such strife
As 'twixt a miser and his wealth is found.
Now proud as an enjoyer, and anon
Doubting the filching age will steal his treasure;
Now counting best to be with you alone,
Then better'd that the world may see my pleasure:
Sometime all full with feasting on your sight,
And by and by clean starved for a look;
Possessing or pursuing no delight
Save what is had, or must from you be took.
Thus do I pine and surfeit day by day,
Or gluttoning on all, or all away.

जरूरी पेट को रोटी विचारों को हमारे तुम
जमीं को हो जरूरत जिस तरह मीठी फुहारों की,
तुम्हें सुख-शान्ति हो मैंने दिया है छेड़ भीषण रण
लगन जैसे कृपण की हो, दशा शंकित विचारों की,
कभी अभिमान होता है जिसे अपने खजाने पर
न कोई लूट ले यह भय तभी आकर सताता है,
मुझे अभिमान होता जब तुम्हारा प्यार पाने पर
न ले जग देख, यह सन्देह उर में घर बनाता है,
तुम्हारे प्रेम की मदिरा नयन से डालकर पीता
कभी बस एक चितवन की लिये तृष्णा मरा करता,
किसी आनन्द या उपलब्धि के कारण नहीं जीता
तुम्हारी ही कृपा पर साँस जीवन की भरा करता,

यही है हाल दिन पर्यन्त दिन तड़पन नहीं जाती
कभी घटती चली आती, कभी बढ़ती चली जाती ।

Sonnet-LXXVI

Why is my verse so barren

Why is my verse so barren of new pride,
So far from variation or quick change?
Why with the time do I not glance aside
To new-found methods, and to compounds strange?
Why write I still all one, ever the same,
And keep invention in a noted weed,
That every word doth almost tell my name,
Showing their birth, and where they did proceed?
O! know sweet love I always write of you,
And you and love are still my argument;
So all my best is dressing old words new,
Spending again what is already spent:
For as the sun is daily new and old,
So is my love still telling what is told.

हमारे छन्द रेतीले न युग के साथ चल पाते
न परिवर्तन, नयापन और न शैली ही नयी कोई,
जमाने की तरफ हम दृष्टि क्योंकर ले नहीं जाते
नयी उपलब्धियों, विधियों न अनुसन्धान ही कोई,
अकेला लिख रहा बातें पुरानी, भाव दुहराये
समझता हूँ न युगधारा नयी, क्या तथ्य है लायी,
हमारे छन्द के प्रति शब्द से झंकार यह आये
दिवा है जन्म किसने और दिशा है कौन सी मायी,
प्रिये, तुमको पता केवल तुम्हारा गीत गाता हूँ
तुम्हीं से प्यार जिससे तुम, हमारा तर्क कुल इतना,
नये परिधान से प्राचीन शब्दों को सजाता हूँ
लगी व्यापार में पूँजी, न पूछो पास धन कितना,

उगा जो सूर्य, कल डूबा, उगेगा फिर वही कल भी
हमारा प्यार फिर-फिर कह रहा वह बात कहकर भी ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LXXVIII

So oft have I invoked

So oft have I invoked thee for my Muse,
And found such fair assistance in my verse
As every alien pen hath got my use
And under thee their poesy disperse.
Thine eyes, that taught the dumb on high to sing
And heavy ignorance aloft to fly,
Have added feathers to the learned's wing
And given grace a double majesty.
Yet be most proud of that which I compile,
Whose influence is thine, and born of thee:
In others' works thou dost but mend the style,
And arts with thy sweet graces graced be;
But thou art all my art, and dost advance
As high as learning, my rude ignorance.

तुम्हें मैं शायदा के नाम पर जब भी पुकारा है
हमारे छन्द में तब छुमछुमाती आ गयी हो तुम,
किसी भी भाव को मिलता गया तत्क्षण सहारा है
कला परिलुप्त कारण प्राण मन पर छा गयी हो तुम,
तुम्हारी एक चितवन पर शिखर चढ़ मूक गाता है
कृपा की कोर पर अज्ञान उड़ता जाय अम्बर में,
सहारा विद्वता में कल्पना के पर लगाता है
बनाता श्रेष्ठ को भी श्रेष्ठतर जो मात्रा पलभर में,
तुम्हें अभिमान आवश्यक हमारी काव्य निधियों का
तुम्हीं से जो प्रभावित और तुमसे जन्म जिसका है,
गढ़ा आकार, शैली, रूप तुमने अन्य कृतियों का
कला तुमसे समाहित जब स्वयं, सम्मान किसका है,

हमारी सब कला केवल तुम्हीं हो, तुम चलाती हो
हमारी अज्ञता जितनी उसे ऊँचे उठाती हो।

Sonnet-LXXIX

Whilst I alone

Whilst I alone did call upon thy aid,
My verse alone had all thy gentle grace;
But now my gracious numbers are decayed,
And my sick Muse doth give an other place.
I grant, sweet love, thy lovely argument
Deserves the travail of a worthier pen;
Yet what of thee thy poet doth invent
He robs thee of, and pays it thee again.
He lends thee virtue, and he stole that word
From thy behaviour; beauty doth he give,
And found it in thy cheek: he can afford
No praise to thee, but what in thee doth live.
Then thank him not for that which he doth say,
Since what he owes thee, thou thyself dost pay.

जरूरत पर अकेले में बुलाया जब कभी तुमको
तुम्हारी ही कृपा से छन्द अनुरन्जित गये थे हो,
मिला अब दूसरों को था मिला वरदान जो मुझको
हमारी काव्य प्रतिभा हो गयी कुण्ठित, गयी अब सो,
तुम्हारा तर्क सुन्दर है, इसे हूँ मानता प्यारे!
'हमारे प्यार को अभिव्यक्ति नूतन चाहिए कोई'
तुम्हारे कवि तुम्हें लेकर गढ़ेंगे तथ्य जो न्यारे
तुम्हीं से माँगकर मोती तुम्हारे हार में कोई,
चुराकर हर अदा से शब्द भरते भावनाओं को
उन्हीं से फिर तुम्हारा रूप गुण महिमा जताते हैं,
तुम्हारे अंग से ले रंग, रंगते फिर कपोलों को
तुम्हें देंगे स्वयं क्या वे तुम्हीं को लूट लाते हैं,

प्रिये, उनके किये इस कार्य पर तुमको न जाना है
तुम्हें लौटा रहे हैं जो तुम्हारा ही खजाना है।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LXXX

O! how I faint

O! how I faint when I of you do write,
Knowing a better spirit doth use your name,
And in the praise thereof spends all his might,
To make me tongue-tied speaking of your fame.
But since your worth, wide as the ocean is,
The humble as the proudest sail doth bear,
My saucy bark, inferior far to his,
On your broad main doth wilfully appear.
Your shallowest help will hold me up afloat,
Whilst he upon your soundless deep doth ride;
Or, being wracked, I am a worthless boat,
He of tall building, and of goodly pride:
Then if he thrive and I be cast away,
The worst was this, my love was my decay.

हमारे बाद भी कोई तुम्हें है चाहने वाला
मुझे यह जानकारी होश में रहने नहीं देती,
तुम्हारे नाम पर सर्वस्व अपना बारने वाला
हमारी जीभ को यह बात कुछ कहने नहीं देती,
तुम्हारा प्यार लेकिन सिन्धु के विस्तार वाला है
जहाँ छोटी बड़ी नावें सदा हैं तैरती रहतीं,
हमारी नाव छोटी, वह बड़ा जलचान वाला है
अगम विस्तार में यह किन्तु मीजों में बहा करती,
इशारा दो तनिका सा यह क्षितिज का छोर छू देगी
नहीं तो क्षुद्र यह तरिणी त्वरित ही डूब जायेगी,
अगम निःशब्द सागर पर बड़ी नौका लहर लेगी
बड़े अभिमान से वे कोठियाँ उत्सव मनावेंगी,

बढ़ेंगे वे तिरस्कृत हो अगर मैं भूल जाऊँगा
हुआ मैं प्यार में बरबाद, दुनिया को बताऊँगा।

Sonnet-LXXXI

Or I shall live your epitaph

Or I shall live your epitaph to make,
Or you survive when I in earth am rotten,
From hence your memory death cannot take,
Although in me each part will be forgotten.
Your name from hence immortal life shall have,
Though I, once gone, to all the world must die:
The earth can yield me but a common grave,
When you entombed in men's eyes shall lie.
Your monument shall be my gentle verse,
Which eyes not yet created shall o'er-read;
And tongues to be your being shall rehearse,
When all the breathers of this world are dead;
You still shall live, such virtue hath my pen,
Where breath most breathes, even in the
mouths of men.

बचूँगा या तुम्हारी कब्र पर स्मृति छन्द लिखने को
तुम्हारे द्वार या तो आखिरी बारात आवेगी
तुम्हारी याद है अब मौत से हरगिज न मिटने को
हमारे नाम का प्रति अंश दुनियाँ भूल जायेगी
तुम्हारे नाम का अब से अमरता पाँव चूमेगी
मगर मैं मर गया तो मर गया बिल्कुल जमाने में
बनेगी कब्र मामूली हमारी गर जगह होगी
जमाने की नजर में तुम बसो दिल के खजाने में
हमारा छन्द प्रिय स्मारक, तुम्हारा वह अमर होगा
खुलें हों जो न अब तक वे नयन उनको निहारेंगे
तुम्हारा नाम कीर्तन उस समय के बाद तक होगा
जमाने से खजाने साँस के जब रीत जावेंगे,

जियो, युग-युग रहो, वह लेखनी मेरी असर वाली
जहाँ खुद साँस लेती साँस दिल कोई नहीं खाली।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-LXXXII

I grant thou wert not

I grant thou wert not married to my Muse,
And therefore mayst without attaint o'erlook
The dedicated words which writers use
Of their fair subject, blessing every book.
Thou art as fair in knowledge as in hue,
Finding thy worth a limit past my praise;
And therefore art enforced to seek anew
Some fresher stamp of the time-bettering days.
And do so, love; yet when they have devised,
What strained touches rhetoric can lend,
Thou truly fair, wert truly sympathized
In true plain words, by thy true-telling friend;
And their gross painting might be better used
Where cheeks need blood; in thee it is abused.

चलो माना, तुम्हारा मन न मेरी शारदा में है
यही कारण तुम्हारी दृष्टि उनपर रुक नहीं पाती
समर्पित शब्द में जो तथ्य लेखक वृन्द लिखते हैं
विषय सुन्दर यद्यपि सदृश्य, है अनमोल प्रति पाती,
विशद है ज्ञान जितना, वर्ण भी सुन्दर मिला तुमको
तुम्हारी पात्रता, सम्भव प्रशंसित हो नहीं मुझसे,
इसी से अन्य प्रतिभा की हुई यह बाध्यता तुमको
तुम्हारे दिव्य जीवन की नयी अभिव्यक्ति हो जिससे,
करो जो चाहते प्यारे, तुम्हें हो जायगा अवगत
किया जो कार्य गुरुतर छन्द में जैसे तुम्हें साधा,
स्वतः जो वस्तुतः सुन्दर रचा उसको स्वयं तद्गत
जिन्होंने शक्तिभर अति शुद्ध वर्णों में तुम्हें बाँधा

रंगा तुमको न लेकिन रंग का उपयोग कर पावे
कपोलों में न जिनके रक्त उनको रंग यह भावे ।

Sonnet-LXXXIX

Say that thou didst forsake

Say that thou didst forsake me for some fault,
And I will comment upon that offence:
Speak of my lameness, and I straight will halt,
Against thy reasons making no defence.
Thou canst not, love, disgrace me half so ill,
To set a form upon desired change,
As I'll myself disgrace; knowing thy will,
I will acquaintance strangle, and look strange;
Be absent from thy walks; and in my tongue
Thy sweet beloved name no more shall dwell,
Lest I, too much profane, should do it wrong,
And haply of our old acquaintance tell.
For thee, against my self I'll vow debate,
For I must ne'er love him whom thou dost hate.

कहो कुछ भी कमी इस वास्ते दामन छुड़ावा है
लगे अभियोग जो उनपर प्रिये तत्क्षण विचारूँगा,
रुकूँगा मैं वहीं यदि पाँव मेरा डगमगाया है
न देकर वृत्तियाँ भी पक्ष अपना मैं सुधारूँगा,
प्रिये, विश्वास है तुमसे तिरस्कृत हो न पाऊँगा
किया निश्चित जिसे आकार तुम उसको नहीं दोगी,
समझ संकेत तेरा मैं स्वयं हो दूर जाऊँगा
हमारी मित्रता तुमसे विदित जग को नहीं होगी,
तुम्हारी छाँह से हटकर चलूँगा, मुँह न खोलूँगा
अधर पर नाम प्रियतम का मधुरतम भी नहीं होगा,
बड़ा वाचाल हूँ मैं किन्तु रस में विष न घोलूँगा
न बोलूँगा, न इस सम्बन्ध का कीर्तन कहीं होगा

तुम्हारे वास्ते मैं आपको दोषी बताऊँगा
तुम्हें जिससे घृणा मैं प्यार उससे कर न पाऊँगा ।





शेक्सपियर के सानेट्स का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XC

Then hate me

Then hate me when thou wilt; if ever, now;
Now, while the world is bent my deeds to cross,
Join with the spite of fortune, make me bow,
And do not drop in for an after-loss:
Ah! do not, when my heart hath 'scaped this sorrow,
Come in the rearward of a conquered woe;
Give not a windy night a rainy morrow,
To linger out a purposed overthrow.
If thou wilt leave me, do not leave me last,
When other petty griefs have done their spite,
But in the onset come: so shall I taste
At first the very worst of fortune's might;
And other strains of woe, which now seem woe,
Compared with loss of thee, will not seem so.

कभी होना अलग यदि है अभी हो जाओ, ऐ प्यारे !
जमाना है तुला जब शाक में मुझको मिलाने को,
मिला उससे, करो नफरत, रचो षडयंत्रा भी सारे
रहो मत शेष जीवन में कभी आँसू गिराने को,
हथौड़े या सुकूँगा जब हृदय पर, हाथ ! क्या लेना
पराजित वेदना में मुस्कराकर फिर करोगी क्या,
न लाना रात नूफानी, बरसता प्रातः मत देना
लिखा जिस घाव से मरना उसे अब फिर भरोगी क्या,
मुझे ही छोड़ना ही तो न मेरे अन्त में आना
जगत की नीचता में जब अधमगति हो चुकी होगी,
अभी प्रारम्भ है कुछ स्वाद मैंने भी नहीं जाना
भला होगा अगर दुर्भाग्य का प्याला प्रथम दोगी,

सभी दुख झेल लूँगा, दुःख जैसे लग रहे हैं जो
दुसह बहदुख न सह सकता, तुम्हें खोकर कभी जो हो !

Sonnet-XCI

Some glory in their birth

Some glory in their birth, some in their skill,
Some in their wealth, some in their body's force,
Some in their garments though new-fangled ill;
Some in their hawks and hounds, some in their horse;
And every humour hath his adjunct pleasure,
Wherein it finds a joy above the rest:
But these particulars are not my measure,
All these I better in one general best.
Thy love is better than high birth to me,
Richer than wealth, prouder than garments' cost,
Of more delight than hawks and horses be;
And having thee, of all men's pride I boast:
Wretched in this alone, that thou mayst take
All this away, and me most wretched make.

किसी को गर्व कुलपर तो, किसी को है निपुणता पर
किसी को नाज दौलत पर, किसी को देह बल पर है,
किसी को रोब अपने वस्त्र की अद्भुत विषमता पर
किसी को फर्र घोड़े श्वान की अच्छी नसल पर है !
अनेकों वस्तु हैं, सब वस्तुओं का रंग है अपना
जिसे है चाहती दुनियाँ उसी पर जान देती है,
हमारा है न इनमें से किसी से वास्ता इतना
निहित जो सार इनमें दृष्टि मेरी जान लेती है,
तुम्हारा प्यार कुल शालीनता से उच्चतर मुझको
विभव से, वस्त्र-भूषण से अधिक वह प्यार रोबीला,
खुशी उनसे अधिक मेरी खुशी हव-श्वान से जिनको
तुम्हारा प्यार पाकर विश्व में मैं एक गर्वीला,

अभागा सोचकर यह हूँ, मुझे अब दुख न दे दो तुम
अभागा दो बना सचमुच, कहीं बहसुख न ले लो तुम !





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XCII

But do thy worst

But do thy worst to steal thyself away,
For term of life thou art assured mine;
And life no longer than thy love will stay,
For it depends upon that love of thine.
Then need I not to fear the worst of wrongs,
When in the least of them my life hath end.
I see a better state to me belongs
Than that which on thy humour doth depend:
Thou canst not vex me with inconstant mind,
Since that my life on thy revolt doth lie.
O what a happy title do I find,
Happy to have thy love, happy to die!
But what's so blessed-fair that fears no blot?
Thou mayst be false, and yet I know it not.

हटा लो दूर अपने को, अधिक इससे करोगी क्या
तुम्हारे प्यार पर अधिकार जीवन भर हमारा है,
तुम्हारे प्यार के उपरान्त भी दुनिया बचेगी क्या
हमारी जिन्दगी का प्यार ही तेरा सहारा है।
हमारी हानि हो जो हो रहे हम किस लिए चिन्तित
हमारा अन्त जब ध्रुव सत्य प्रिय, किन्चित् विमुखता में,
अवस्था और भी ऊँची मिलेगी तब हमें निश्चित
मिले जितनी तुम्हारे प्यार की मादक सरसता में,
प्रिये, चंचल तुम्हारा मन दुखी हमको न कर सकता
टिके हैं हम तुम्हारी इस निटुर विपरीतता पर ही,
हमें सौभाग्य है इस गर्व पर पायी सुखद प्रभुता
तुम्हारा प्यार पाकर धन्य है, हम धन्य मरकर भी,

कहीं जिसमें न हो कल्मष, सुखद सौन्दर्य वह कितना
असत् तुम हो सको तो हो, विदित हमको नहीं इतना।

Sonnet-XCIII

So shall I live

So shall I live, supposing thou art true,
Like a deceived husband; so love's face
May still seem love to me, though altered new;
Thy looks with me, thy heart in other place:
For there can live no hatred in thine eye,
Therefore in that I cannot know thy change.
In many's looks, the false heart's history
Is writ in moods, and frowns, and wrinkles strange.
But heaven in thy creation did decree
That in thy face sweet love should ever dwell;
Whate'er thy thoughts, or thy heart's workings be,
Thy looks should nothing thence, but sweetness tell.
How like Eve's apple doth thy beauty grow,
If thy sweet virtue answer not thy show!

बड़ी ही बावफा तुम मानकर यह खुश रहूँ हरदम
छले पति की तरह मैं प्यार का देखूँ चमकता मुख,
रहे यह भाव मेरा, हो गयी अब और यद्यपि तुम
हृदय अन्यत्र केवल नेत्र मेरे नेत्र के सन्मुख,
धृणा का भाव तेरी आँख में हो ही नहीं सकता
बदलते रंग इस कारण नहीं पहचान में आते,
हृदय का भाव झूठा अन्य नवनों से बरस पड़ता
सिकन, कुछ झुर्रियाँ, कुछ बल, बदल सब रंग हैं जाते,
बनाया है तुम्हारे रूप को लेकिन प्रकृति ने यों
मधुरता प्रेम की उसमें कभी घटने नहीं पाये,
तुम्हारे कार्य और विचार उर के भाव जो भी हों
नयन में किन्तु केवल भाव मधुरिम प्यार के छाये,

निखरता जा रहा सौन्दर्य अनुपम 'ज्ञान-फल' ऐसा
हुआ क्या, भाव भी सुन्दर न हो यदि रूप के जैसा।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XCIV

They that have power

They that have power to hurt, and will do none,
That do not do the thing they most do show,
Who, moving others, are themselves as stone,
Unmoved, cold, and to temptation slow;
They rightly do inherit heaven's graces,
And husband nature's riches from expense;
They are the lords and owners of their faces,
Others, but stewards of their excellence.
The summer's flower is to the summer sweet,
Though to itself, it only live and die,
But if that flower with base infection meet,
The basest weed outbraves his dignity:
For sweetest things turn sourest by their deeds;
Lilies that fester, smell far worse than weeds.

बनाना चाहते यदि कष्टमय जीवन बना देते
मगर करते न ऐसा काम दिखलावा नहीं कोई,
गला पाषाण दें पर आपको पत्थर बना लेते
कठिन जो ब्रज से निष्ठुर ललक जिनको नहीं कोई,
वहीं हैं स्वर्ग की सुख-सम्पदा के मात्र अधिकारी
प्रकृति के सदगुणों का बस वही विस्तार करते हैं,
सफल प्रभुता उन्हीं की है दमकती मुखछटा न्यारी
धरा के शेष जन सेवक सदृश दिन-रात रहते हैं,
बहारों के लिए जो फूल मधुरस गन्ध बिखराये
मगर अपने लिए कुछ काल जीते और मर जाते,
वनस्पति हीन कोई यदि सुमन के संग लग जाये
मलिन करके उसे निज क्षुद्रता पर आप इतराते,

मधुरतम वस्तु भी दुष्कृत्य से अपकीर्ति पाती है
कमलिनी क्यों न हो, सड़ जाय तो दुर्गन्ध आती है।

Sonnet-XCV

How sweet and lovely

How sweet and lovely dost thou make the shame
Which, like a canker in the fragrant rose,
Doth spot the beauty of thy budding name!
O! in what sweets dost thou thy sins enclose.
That tongue that tells the story of thy days,
Making lascivious comments on thy sport,
Cannot dispraise, but in a kind of praise;
Naming thy name blesses an ill report.
O! what a mansion have those vices got
Which for their habitation chose out thee,
Where beauty's veil doth cover every blot
And all things turns to fair that eyes can see!
Take heed, dear heart, of this large privilege;
The hardest knife ill-used doth lose his edge.

गुनाहों को सलोना और सरस कितना बना देती
कली से खिल रहे सौन्दर्य में जो धर किये रहते,
सुमन की पाँखुरी ज्यों कीट को उर में बसा लेती
तुम्हारी ओट में जो रूप की मदिरा पिया करते,
तुम्हारी मौज-मस्ती की रसीली चुटकियाँ लेकर
बड़े ही चाव से घर-घर कही जाती कहानी है,
शिकायत गर नहीं लेकिन अजब सी चुस्कियाँ लेकर
जमाना कर रहा बदनाम प्रिय तेरी जवानी है,
गुनाहों ने उठायी कोठियाँ अरमान से इतने
बसाने के लिए जिनको तुम्हें अपना बनाते हैं,
जहाँ सौन्दर्य धूँध में छिपाता दाग है कितने
सुनहरे पंख सारे पाप कर्मों को लगाते हैं,

अपरिमित शक्ति से अपनी, भला हो यदि सम्मल पाती
छुरी हो तेज कितनी हूँ, मगर है धार मुड़ जाती।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XCVI

Some say thy fault is youth

Some say thy fault is youth, some wantonness;
Some say thy grace is youth and gentle sport;
Both grace and faults are lov'd of more and less:
Thou mak'st faults graces that to thee resort.
As on the finger of a throned queen
The basest jewel will be well esteem'd,
So are those errors that in thee are seen
To truths translated, and for true things deem'd.
How many lambs might the stern wolf betray,
If like a lamb he could his looks translate!
How many gazers mightst thou lead away,
If thou wouldst use the strength of all thy state!
But do not so, I love thee in such sort,
As thou being mine, mine is thy good report.

तुम्हारा दोष यौवन तो रंगीलापन कहे कोई
कहे कोई जवानी खूबसूरत हर अदा तेरी,
कहीं पर गुण, कहीं अवगुण, भले चाह कर कोई
बदल दे दोष को गुण में अलौकिक वह कृपा तेरी,
सुशोभित उँगलियों में काँच कोई राजरानी की
रत्न बहुमूल्य, इससे कम न कोई आँक सकता है,
यही है हाल त्रुटियों का भरी मद से जवानी की
यही है तथ्य, इससे कम न कोई मान सकता है,
बहुत से भेड़िये भी मेमनों जैसे लगा करते
अगर वे मेमनों की भाँति केवल देखना जानें
बहुत से देखने वाले इसी भ्रम में पला करते
लगा दो शक्ति सब अपनी, करो यदि काम मनमाने,

मगर ऐसा न करना, रूप यह प्यारा तुम्हारा है
हमारे तुम, तुम्हारे प्रति हमारा भाव न्यारा है।

Sonnet-XCVII

How like a winter

How like a winter hath my absence been
From thee, the pleasure of the fleeting year!
What freezings have I felt, what dark days seen!
What old December's bareness everywhere!
And yet this time removed was summer's time;
The teeming autumn, big with rich increase,
Bearing the wanton burden of the prime,
Like widow'd wombs after their lords' decease:
Yet this abundant issue seemed to me
But hope of orphans, and unfathered fruit;
For summer and his pleasures wait on thee,
And, thou away, the very birds are mute:
Or, if they sing, 'tis with so dull a cheer,
That leaves look pale, dreading the winter's near.

बिछुड़ना ऐ प्रिये तुमसे ठिठुरते शीत जैसा है
किसी बीते जमाने की खुशी जैसी चुभन होती,
जमी ज्यों बर्फ जीवन में, समय देखा न ऐसा है
शिशिर की वस्तु निर्जनता दिशाओं में रही रोती,
बिछुड़ने का समय यद्यपि रहा मौसम बहारों का
लिवे फल-फूल फसलों को शरद ऋतु आ गयी न्यारी,
जवानी सी सजी, बिखरा हुआ वैभव सिंगारों का
मगर ज्यों कोख विधवा की, हुई पतिहीन बेचारी,
अनाथों के सरीखे हैं मुझे वे लग रहे सारे
पड़ा यह माल लावारिस करेगा कौन निगरानी,
बहारें, मस्तिष्क, खुशियाँ लिये तुम हो उधर प्यारे!
इधर हैं मौन पंछी भी बहाते आँख से पानी,

कहीं यदि खोलते वे कण्ठ, कटु वह स्वर निकलता है
भयातुर पात पीले हो उठें, हिमखण्ड गलता है।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-XCVIII

From you have I been absent

From you have I been absent in the spring,
When proud pied April, dressed in all his trim,
Hath put a spirit of youth in every thing,
That heavy Saturn laughed and leapt with him.
Yet nor the lays of birds, nor the sweet smell
Of different flowers in odour and in hue,
Could make me any summer's story tell,
Or from their proud lap pluck them where they grew:
Nor did I wonder at the lily's white,
Nor praise the deep vermilion in the rose;
They were but sweet, but figures of delight,
Drawn after you, you pattern of all those.
Yet seemed it winter still, and you away,
As with your shadow I with these did play.

गया मैं हो जुदा तुमसे, बहारों के जमाने में
महीना चैत्र का बन-ठन सँवरकर आ गया प्यारे!
मजा लेने लगा वह हर किसी से दिल लगाने में
विहँसकर आ गया खल भार, उस पर छा गया प्यारे !
मगर गाये न पंछी, औ' न महकें फूल ही कोई !
न फूलों की गमक या रंग ने ही कुछ असर डाले,
न बहकी बात मस्ती की, न मोली भूल ही कोई
सजीले झोड में उनके न डाले प्यार के प्याले !
हुआ कुछ भी नहीं विस्मय कुमुदिनी की गोराई पर
गुलाबों के सिंदूरी रंग पर भी कुछ न आकर्षण,
मधुर है, गन्धयुत, आनन्दयुत, पर किस सचाई पर
तुम्हीं आदेश हो इनके, तुम्हीं हो एक आलम्बन,

मगर तुमसे जुदा होकर बहारों में ठिठुरता हूँ
इन्हें छाया समझ तेरी व्यथित मन खेल करता हूँ ।

Sonnet-XCIX

The forward violet

The forward violet thus did I chide:
Sweet thief, whence didst thou steal thy sweet
that smells,
If not from my love's breath? The purple pride
Which on thy soft cheek for complexion dwells
In my love's veins thou hast too grossly dy'd.
The lily I condemned for thy hand,
And buds of marjoram had stol'n thy hair;
The roses fearfully on thorns did stand,
One blushing shame, another white despair;
A third, nor red nor white, had stol'n of both,
And to his robbery had annexed thy breath;
But, for his theft, in pride of all his growth
A vengeful canker eat him up to death.
More flowers I noted, yet I none could see,
But sweet, or colour it had stol'n from thee.

सुनाई डोट कसकर एक दिन बहकी चमेली को
महँकती फिर रही हो, चोर हो खुशबू कहाँ पायी,
कहो क्या साँस से प्रिय की ? बनी फिरती रंगीली जो
तुम्हारे गाल पर अस्फुल, कहाँ की लालिमा छायी !
लिया है रंग मेरी प्रेमिका के ही रुधिर से क्या?
कुमुदिनी ने गोराई ली प्रिया के कर-कमल से ही,
दिया चम्पाकली ने बाल पर प्रिय के गजब क्या, डा
छिपाया मुँह गुलाबों ने सहम कर कण्ठकों में ही,
लजायी, एक पीली दूसरी औ' तीसरी ऐसी
रही कुछ लाल, कुछ उजली तुम्हारी साँस कुछ ले ली,
बढ़ी कुछ दूर तक आगे, लगी वह बेहया जैसी
सजा उसको किये की एक लघुतम कीट ने दे दी,

जहाँ तक फूल देखे, एक भी ऐसा न पाया है
न जिसने रूप, रस, या गन्ध प्रिय तेरा चुराया है ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-C

Where art thou Muse

Where art thou Muse that thou forget'st so long,
To speak of that which gives thee all thy might?
Spend'st thou thy fury on some worthless song,
Darkening thy power to lend base subjects light?
Return forgetful Muse, and straight redeem,
In gentle numbers time so idly spent;
Sing to the ear that doth thy lays esteem
And gives thy pen both skill and argument.
Rise, resty Muse, my love's sweet face survey,
If Time have any wrinkle graven there;
If any, be a satire to decay,
And make Time's spoils despised every where.
Give my love fame faster than Time wastes life,
So thou prevent'st his scythe and crooked knife.

किधर ऐ शारदे ! भूली, लगायी देर जो इतनी
तुम्हारी शक्ति है सम्पूर्ण जिससे वह सुनाने में,
निरर्थक गीत में विद्युब्ध तेरी भावना कितनी
लगी जो हीन विषयों पर प्रखर प्रभुता गंवाने में,
बली आ लौट, मेरी शारदे ! भूली हुई भोली
विराजो छन्द में सीधे समय सब व्यर्थ जाता है,
उसी के प्रान में गुंजे तुम्हारी मधुमयी बोली
तुम्हारे रूप में डल जो तुम्हारा गीत गाता है,
उठो ऐ शारदे ! मेरी, प्रिया का दिव्य मुखमण्डल
निहारो, क्या समय का चिन्ह उस पर है पड़ा कोई,
मिले यदि हास के लक्षण, विकृत यदि अंग हों कोमल
समय के हाथ से लो छीन निधियाँ प्यार की खोई,

न लूटे काल जीवन को, यशस्वी प्यार मेरा हो
समय की वज्र हँसिया और घुरी की धार को रोको ।

Sonnet-CI

O truant Muse

O truant Muse what shall be thy amends
For thy neglect of truth in beauty dyed?
Both truth and beauty on my love depends;
So dost thou too, and therein dignified.
Make answer Muse: wilt thou not haply say,
'Truth needs no colour, with his colour fixed;
Beauty no pencil, beauty's truth to lay;
But best is best, if never intermixed'?
Because he needs no praise, wilt thou be dumb?
Excuse not silence so, for't lies in thee
To make him much outlive a gilded tomb
And to be praised of ages yet to be.
Then do thy office, Muse; I teach thee how
To make him seem, long hence, as he shows now.

भरमती शारदे ! इस प्रश्न का उत्तर बताओ क्या,
हुई जो भूल तुमसे सत्यमय सुन्दर बनाने में,
हमारा प्रेम ही आधार सुन्दर, सत्य, दोनों का
तुम्हारा भी यही अवलम्ब गौरव कीर्ति पाने में,
बताओ, शारदे ! बोलो, यही उत्तर न क्या दोगी,
न चढ़ती सत्य पर कलई कि इसका रंग अपना है,
बनाये सत्यमय सुन्दर, निरर्थक तूलिका होगी
सदा से श्रेष्ठ जो वह श्रेष्ठ, मिश्रण व्यर्थ करना है,
प्रशंसा यदि अनावश्यक, कहो गुंगी रहोगी तुम
न कर लो मौन धारण दिव्य कारण वह तुम्हीं में है,
सुनहरी कब्र से जीवन उठा ऊपर सकोगी तुम
युगों तक हो प्रशंसा, शक्ति-कारण वह तुम्हीं में है,

करो कर्तव्य-पालन शारदे ! तुमको सिखाऊँगा
प्रकट जो रूप सुन्दर मैं उसे शाश्वत बनाऊँगा ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-CII

My love is strengthened

My love is strengthened, though more weak in seeming;
I love not less, though less the show appear;
That love is merchandized, whose rich esteeming,
The owner's tongue doth publish every where.
Our love was new, and then but in the spring,
When I was wont to greet it with my lays;
As Philomel in summer's front doth sing,
And stops his pipe in growth of riper days:
Not that the summer is less pleasant now
Than when her mournful hymns did hush the night,
But that wild music burthens every bough,
And sweets grown common lose their dear delight.
Therefore like her, I sometime hold my tongue:
Because I would not dull you with my song.

हमारा प्यार गहरा है दिखाने में नहीं आये
प्रदर्शन में कमी हो प्यार लेकिन कम न हो सकता,
सुगंध का ढोल पीटे, प्रेम की जो हाट लगवाये
जमाने में उसी के प्रेम का सौदा बिका करता,
नया था प्यार, जब लेकिन बहारों की फिजां छये
मिलन के हौसले के गीत से मेरी तैयारी हो,
बसन्ती वायुमण्डल में कुहक ज्यों कोकिला गाये
झर मौसम उठे गदरा, उधर वह मौन पारी हो,
न सोचो यह, बहारों में मजा वैसा नहीं है अब
कुहक से कोकिला ने रात जब शामोश कर डाली,
मगर ये गीत रुखे, बोझ से इन डालियों को सब
मधुरिमा से लदी इतनी, लगे ये गीत अब खाली,

कभी इस कोकिला सा-ही जवों कर बन्द लेता हूँ
मुझे लगता तुम्हें इस गीत से कुछ कष्ट देता हूँ।

Sonnet-CIV

To me, fair friend

To me, fair friend, you never can be old,
For as you were when first your eye I ey'd,
Such seems your beauty still. Three winters cold,
Have from the forests shook three summers' pride,
Three beauteous springs to yellow autumn turned,
In process of the seasons have I seen,
Three April perfumes in three hot Junes burned,
Since first I saw you fresh, which yet are green.
Ah! yet doth beauty like a dial-hand,
Steal from his figure, and no pace perceived;
So your sweet hue, which methinks still doth stand,
Hath motion, and mine eye may be deceived:
For fear of which, hear this thou age unbred:
Ere you were born was beauty's summer dead.

तुम्हारी वृद्धता का हे सुमुखि ! आभास क्या मुझको
प्रथम दर्शन सदृश सौन्दर्य था जो आज भी तुममें,
तुषारों ने उजाड़े तीन बासन्ती सिंगारों को
बसन्ती रूप गदराये पफसल के तीन मौसम में,
तुम्हें देखा प्रथम जबसे नशीली वायु चड़ता की
झुलसकर रह गयी जो तीन अतिदाहक निदार्थ में,
रहो ऋतुएँ बदलतीं किन्तु क्या रचना विधता की
नशा उतरे, न तुम उतरो, घटे मस्ती न आँखों में,
मगर वह रूप भी बदले घड़ी की सुइयाँ ऐसी
कहाँ से जा कहाँ पहुँचे, लम्बाई दे न गति जिनकी,
तुम्हारी भी मधुरिमा सोचता यद्यपि प्रथम जैसी
सतत गतिशील है, धोखा नयन को, बात है भ्रम की,

अजन्मा विश्व में ऐ रूपसी ! सुन लो इसी भय से
लुटी सुषमा बसन्तों की तुम्हारे जन्म के पहले।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-CV

Let not my love

Let not my love be called idolatry,
Nor my beloved as an idol show,
Since all alike my songs and praises be
To one, of one, still such, and ever so.
Kind is my love to-day, to-morrow kind,
Still constant in a wondrous excellence;
Therefore my verse to constancy confined,
One thing expressing, leaves out difference.
Fair, kind, and true, is all my argument,
Fair, kind, and true, varying to other words;
And in this change is my invention spent,
Three themes in one, which wondrous scope affords.
Fair, kind, and true, have often lived alone,
Which three till now, never kept seat in one.

कहे कोई न मेरे प्रेम को यह मूर्तिपूजा है
न मेरी प्रियतमा को ही कहे प्रतिमा प्रदर्शन की,
प्रशंसा और यश का गीत कारण एक जैसा है
सभी की भावनाएँ एक नूतन की, चिरन्तन की
रहा जो आज मेरा प्रेम शिवमय कल वही होगा
विलक्षण रूप में शाश्वत रहेगा प्यार भी मेरा,
रहे यह छन्द भी शाश्वत, परे इसके नहीं होगा
सभी में एक ही अभिव्यक्ति, अन्तर है, न है फेरा,
चिरन्तन 'सत्य शिव सुन्दर' हमारा तर्क बस इतना
घटित हो अन्य शब्दों में सदा बस 'सत्य शिव सुन्दर',
इसी रूपान्तरण में ज्ञान अनुसंधान है जितना
विलक्षण एक में त्रय तथ्य का यह रूप अति मनहर,

परम प्रिय 'सत्य शिव सुन्दर' अलग देखे गये बहुधा
प्रथम तुमसे किसी में भी एकत्रित हों, न थी सुविधा।

Sonnet-CVI

When in the chronicle

When in the chronicle of wasted time
I see descriptions of the fairest wights,
And beauty making beautiful old rhyme,
In praise of ladies dead and lovely knights,
Then, in the blazon of sweet beauty's best,
Of hand, of foot, of lip, of eye, of brow,
I see their antique pen would have expressed
Even such a beauty as you master now.
So all their praises are but prophecies
Of this our time, all you prefiguring;
And for they looked but with divining eyes,
They had not skill enough your worth to sing:
For we, which now behold these present days,
Have eyes to wonder, but lack tongues to praise.

उलटकर देखता तारीख जब गुजरे जमाने का
बड़ी बातें लिखी मिलती परीजादों, नवाबों की
पुरानी बन्दिशों में खूबियों को खींच लाने का
बड़ी तारीफ देखी रानियों की, शाहजादों की,
सजाये रूप के बाजार की गहरी नुमाइश में
किसी की आँख, भौंहें, होंठ, कदमों और बालों की,
कलम उस्ताद की जितनी बली, इनकी हिफाजत में
बसी होती अजब दुनिया तुम्हारे ही ख्यालों की,
इसी तारीफ में लेकिन मिला हमको इशारा है
हमारे इस जमाने का-तुम्हारे पास आने का,
बुलन्दी से उन्होंने रूप वह देखा तुम्हारा है
न इतना फन रहा उनमें तुम्हारा गीत गाने का।

मगर जब इन दिनों की खूबियों पर आँख जाती है
महज हैरान रहती है, जबां कुछ कह न पाती है।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-CVIII

What's in the brain

What's in the brain that ink may character
Which hath not figured to thee my true spirit?
What's new to speak, what now to register,
That may express my love, or thy dear merit?
Nothing, sweet boy; but yet, like prayers divine,
I must each day say o'er the very same;
Counting no old thing old, thou mine, I thine,
Even as when first I hallowed thy fair name.
So that eternal love in love's fresh case,
Weighs not the dust and injury of age,
Nor gives to necessary wrinkles place,
But makes antiquity for aye his page;
Finding the first conceit of love there bred,
Where time and outward form would show it dead.

विचारों में बचा क्या जो तुम्हें स्याही पिलायें हम
हमारे सत्य भावों में उठे हो तुम निखर कितना,
न लिखने को नया कुछ है, न पढ़ने को बचा नूतन
हमारा प्यार, तेरा गुण, न कहने को रहा इतना,
सही, सुकुमार, लेकिन किन्तु जैसे प्रार्थना का स्वर
कहो जो भी उसी की नित्य दुहराना हमें केवल,
हमीं से तुम, तुम्हीं से हम, पुरातन तत्त्व चिर सुन्दर
तुम्हारा नाम पहले सा ध्वनित है आज भी प्रतिफल
चिरन्तन प्रेम बसता प्रेम के नूतन कलेवर में
समय की मार, गर्द-गुबार है उस पर नहीं आते,
शिकन या झुर्रियां फटकें नहीं इस प्यार के घर में
पुराने पृष्ठ जितने प्यार से पलटे चले जाते,

मधुर इस प्यार में धोखा कहीं भी यदि नजर आवे
जमाने के असर से वह कहीं शायद न मर जाये !

Sonnet-CIX

O! never say that

O! never say that I was false of heart,
Though absence seemed my flame to qualify,
As easy might I from my self depart
As from my soul which in thy breast doth lie:
That is my home of love: if I have ranged,
Like him that travels, I return again;
Just to the time, not with the time exchanged,
So that myself bring water for my stain.
Never believe though in my nature reigned,
All frailties that besiege all kinds of blood,
That it could so preposterously be stained,
To leave for nothing all thy sum of good;
For nothing this wide universe I call,
Save thou, my rose, in it thou art my all.

हृदय का झूठ हूँ, मुझको कभी ऐसा नहीं कहना
जुदाई में लगे मेरे हृदय की आग यदि शीतल,
सरल मेरा स्वयं से हो अलग इस भांति है रहना
अलग हों प्रान ये जैसे तुम्हारे वक्ष से कोमल,
अगर इस प्यार के घर से कभी बाहर निकलता हूँ
सपफर के बाद जैसे फिर मुसाफिर घर चला आये,
बिना बदले हुए कुछ ठीक वैसे लौट आता हूँ
लिये आता स्वयं पानी कि जिससे दाग धुल जाये
कभी विश्वास मत करना यद्यपि मेरी प्रकृति में है
सभी कमजोरियाँ जो हैं रुधिर में तैरती सबको,
लगाऊँ दाग भीषण मूर्खता ऐसी न मुझमें है
सुकृतियों की तुम्हारी सम्पदा यह छोड़ दूँ कैसे,

तुम्हारे ही लिए मेरे सुमन, ब्रह्माण्ड भर छानूँ
तुम्हीं सर्वस्व मेरे विश्व में केवल तुम्हें जानूँ ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-CX

Alas! 'tis true

Alas! 'tis true, I have gone here and there,
And made my self a motley to the view,
Gored mine own thoughts, sold cheap what is most dear,
Made old offences of affections new;
Most true it is, that I have looked on truth
Askance and strangely; but, by all above,
These blanches gave my heart another youth,
And worse essays proved thee my best of love.
Now all is done, have what shall have no end:
Mine appetite I never more will grind
On newer proof, to try an older friend,
A god in love, to whom I am confined.
Then give me welcome, next my heaven the best,
Even to thy pure and most most loving breast.

अरे सच है, बहुत भटका, यहाँ घूमा, वहाँ नाचा
धुजाँ जैसा बनाये आप अपने को नजारों का,
खयालों का बहाते खून दिल बेदाम ही बेचा
पुराना पाप दुहराया नये प्रेमी विचारों का,
यद्यपि यह सत्य, बिल्कुल सत्य, मुँह फेरा सचाई से
मिला यह ज्ञान सर्वोपरि, बहुत इस भाँति जो भटका,
बना लाया जहाँ फिर दिल तुम्हारी बेवफाई से
न कोई दूसरा तुम-सा, मुसीबत ने दिया बतला,
हुआ जो हो चुका, अबसे वही हो फिर न जो होए
क्षुध को अब अधिक अपने अभावों में न पीसूँगा,
मिले तुम मित्र सच्चे अनुभवों से कौन फिर खोए
तुम्हीं आराध्य, मेरे देव, जिसमें लीन अब हूँगा,

तुम्हीं ऐ देव सर्वोत्तम, मुझे अपनी दवा देना
हृदय के पुण्य-पावन प्यार में मुझको बसा लेना !

Sonnet-CXI

O! for my sake

O! for my sake do you with Fortune chide,
The guilty goddess of my harmful deeds,
That did not better for my life provide
Than public means which public manners breeds.
Thence comes it that my name receives a brand,
And almost thence my nature is subdued
To what it works in, like the dyer's hand:
Pity me, then, and wish I were renewed;
Whilst, like a willing patient, I will drink
Potions of eisel 'gainst my strong infection;
No bitterness that I will bitter think,
Nor double penance, to correct correction.
Pity me then, dear friend, and I assure ye,
Even that your pity is enough to cure me.

हमारे लाभ के हित भाग्य को फटकारते क्यों हो
हमारे दोषपूर्णित कार्य की अपराधिनी देवी,
दिया उसने अपेक्षित साधनों को क्यों नहीं हमको
उदँ ऊँचे, चलूँ जिस ढंग से संसार के प्राणी,
समस्या हो खड़ी तब नाम को मेरे मुहर लगती
यहीं से है चली आती प्रकृति मेरी विवशता में,
करूँ जैसे कि हैं रंगरेजिनें कपड़े रंगा करती
कृपा हो, चाहता हूँ मैं रहूँ नूतन व्यवस्था में,
समुत्सुक रोगियों की भाँति पीने को सदा प्रस्तुत
दवा की घूँट कड़वी रोग से निज को बचाने को,
विचारूँ भी न कटुतम स्वाद, पीने को रहूँ उद्यत
करूँगा यह न दुहरा तप सही फिर शुद्ध करने को,

दया मुझपर करो प्यारे, मुझे अब चाहिए माफी
दया की दृष्टि ही मुझको बचाने के लिए काफी !





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-CXII

Your love and pity

Your love and pity doth the impression fill,
Which vulgar scandal stamped upon my brow;
For what care I who calls me well or ill,
So you o'er-green my bad, my good allow?
You are my all-the-world, and I must strive
To know my shames and praises from your tongue;
None else to me, nor I to none alive,
That my steeled sense or changes right or wrong.
In so profound abysm I throw all care
Of others' voices, that my adder's sense
To critic and to flatterer stopped are.
Mark how with my neglect I do dispense:
You are so strongly in my purpose bred,
That all the world besides methinks y'are dead.

तुम्हारी प्यार और करुणाजनित जो भावनाएँ हैं
मुझे बदनामियाँ इनके लिए मिलती रहें जो भी,
कहे कोई भला, कोई बुरा, क्या चिन्तनाएँ हैं
निवाहे बल रही जब तुम, भला को भी, बुरा को भी,
तुम्हीं संसार हो सम्पूर्ण, तुमसे जानना चाहूँ
तुम्हारी ही जवानी दोष-गुण जो भी रहें मुझमें,
न कोई और मेरा है, न मैं ही दूसरों का हूँ
बना दे भाव दृढ़ या जो बदल दे दोष में, गुण में,
किसी गहरे अतल में चिन्तनाएँ डाल देता सब
कहे जो बात यह दुनिया, न विषमय खोभ हो मुझको,
प्रशंसक और आलोचक प्रभावित कर सकेंगे कब
तुम्हीं देखों सहज कैसे उड़ा देता निबिड़ तम को,

हमारे लक्ष्य में इस भाँति दृढ़ता से बसी हो तुम
तुम्हारे बाद दुनिया मर गयी हो, वह समझते हम ।

Sonnet-CXIII

Since I left you

Since I left you, mine eye is in my mind;
And that which governs me to go about
Doth part his function and is partly blind,
Seems seeing, but effectually is out;
For it no form delivers to the heart
Of bird, of flower, or shape which it doth latch:
Of his quick objects hath the mind no part,
Nor his own vision holds what it doth catch;
For if it see the rud'st or gentlest sight,
The most sweet favour or deformed'st creature,
The mountain or the sea, the day or night,
The crow, or dove, it shapes them to your feature.
Incapable of more, replete with you,
My most true mind thus maketh mine eye untrue.

बिलग तुमसे हुआ जब से गयी आँखें उतर दिल में
जमाने में मुझे रहती धुमाती औ' चलाती जो,
कभी तो देखती जग को, कभी अन्धी बनी धूमें
लगे हों देखती जैसी मगर सच में गयीं जो खो,
जिसे देखें उसी का रूप मन में बन नहीं पाता
न पंछी का, न फूलों का, न उनका देखती जिनको,
उड़ा जाता नजारा एक भी दिल में नहीं आता
न पाये दृष्टि में वह बाँध जिनको हेरती उनको !
भली हों या बुरी हों, वस्तु जो भी देखती हैं ये
बहुत अनुकूल मन के या विकृत कटु रूप कोई हो,
अचल हो, सिन्धु हो, "दिन-रात देते जो सतत पैंरे
कबूतर हो कि हो कागा," तुम्हींमय देखता सबको,

बना असमर्थ मन कितना, तुम्हीं में घर बसाये हैं
स्वयं है सत्य यद्यपि आँख को झूठा बनाये है ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-CXVI

Let me not to the marriage

Let me not to the marriage of true minds

Admit impediments. Love is not love

Which alters when it alteration finds,

Or bends with the remover to remove:

O, no! it is an ever-fixed mark,

That looks on tempests and is never shaken;

It is the star to every wandering bark,

Whose worth's unknown, although his height be taken.

Love's not Time's fool, though rosy lips and cheeks

Within his bending sickle's compass come;

Love alters not with his brief hours and weeks,

But bears it out even to the edge of doom.

If this be error and upon me proved,

I never writ, nor no man ever loved.

न बाधित मैं करूँ सम्बन्ध को, सच्चे विचारों से
नहीं रोको, मुझे वह प्यार भी क्या प्यार कहलाये,
प्रभावित जो नये परिवर्तनों, नूतन सिंगारों से
हटाने से किसी के जो सहज ही आप हट जाये,
अरे, ऐसा नहीं है, सत्य शाश्वत रूप कहलाता
सदा ललकारता तूफान को, विचलित न होता जो,
सितारा सा भटकती तरणियों को मार्ग दिखलाता
ऊँचाई का यद्यपि अनुमान मूल्यांकन न जिसका हो,
नहीं कटुकाल सच्चे प्यार को पट्टी पड़ा सकता
गुलाबी होठ, अरुण कपोल पर हँसिया धुमाये वह,
कभी घण्टों, मिनट, सप्ताह में क्या प्रेम भी बँधता !
समय की धार पर बढ़ता चलेगा युग-युगों तक यह,

मगर यह झूठ, यदि वह झूठ मुझ पर सिद्ध हो पाये
लिखा कुछ भी नहीं, जो प्यार मेरा व्यर्थ हो जाए ।

Sonnet-CXIX

What potions have I drunk

What potions have I drunk of Siren tears,

Distilled from limbecks foul as hell within,

Applying fears to hopes, and hopes to fears,

Still losing when I saw myself to win!

What wretched errors hath my heart committed,

Whilst it hath thought itself so blessed never!

How have mine eyes out of their spheres been fitted,

In the distraction of this madding fever!

O benefit of ill! now I find true

That better is by evil still made better;

And ruined love, when it is built anew,

Grows fairer than at first, more strong, far greater.

So I return rebuked to my content,

And gain by ills thrice more than I have spent.

न जाने औसुओं की घूँट मस्तानी लिया पी क्या
छनी जो नर्क से लायी गयी विष की पियाली में,
कभी आशा निराशा से, निराशा से कभी आशा
समझता तट मिला दूबा मगर दो बूँद पानी में,
हृदय से मूल अभिशापित न जाने क्या हुई ऐसी
स्वयं को भाग्यशाली औ' सुखी था मानता मैं जब,
निकल निज वायुमण्डल से कहाँ वह आँख जा उलझी
विकल विक्षिप्तता, उद्विग्नता में जा फँसी है अब
बुराई के भले परिणाम, तुमको मानता हूँ अब
भला है जो बुराई से भला वह और हो जाता,
मिटायें प्रेम के संसार को फिर से बसालें जब
अपेक्षाकृत अधिक दृढ़ औ' सुविकसित रूप वह पाता,

तिरस्कृत और विनिंदित लौटता सन्तोष यह लेकर
बुराई से भलाई चौगुनी पाई न कुछ देकर ।





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-CXXI

'Tis better to be vile

'Tis better to be vile than vile esteemed,
When not to be receives reproach of being;
And the just pleasure lost, which is so deemed
Not by our feeling, but by others' seeing:
For why should others' false adulterate eyes
Give salutation to my sportive blood?
Or on my frailties why are frailer spies,
Which in their wills count bad what I think good?
No, I am that I am, and they that level
At my abuses reckon up their own:
I may be straight though they themselves be bevel;
By their rank thoughts, my deeds must not be shown;
Unless this general evil they maintain,
All men are bad and in their badness reign.

न बद होना बुरा, जितना बुरा बदनाम होना है
बुराई हो न जब, है दाग लग जाता बुराई का,
खुशी दिल की न मिल पाती, पड़ा दिन-रात रोना है
बुराई का न, गैरों की महज झूठी गवाही का,
कहो, यों गैर की झूठी निगाहें क्यों उलझती हैं
मुहब्बत से भरे जजबात की जिन्दा खानी से,
हमारी खामियों से खामियाँ क्यों खार खाती हैं
हमारे ख्याल जो अच्छे, उन्हें हैं छेड़खानी से,
अरे, मैं हूँ वही जो हूँ, बुरा जो देखते मुझमें
महज अपनी बुराई को जमाने में गिनाते हैं,
चलूँ सीधे, फिसलने में न लगती देर कुछ उनमें
गिरे उनके ख्यालों के असर मुझपर न आते हैं,

बुराई यह सभी में यदि बुरे इन्सान हैं सारे
बुराई की हुकूमत को चलाते जा रहे प्यारे !

Sonnet-CXXIII

No, Time, thou shalt not boast

No, Time, thou shalt not boast that I do change:
Thy pyramids built up with newer might
To me are nothing novel, nothing strange;
They are but dressings of a former sight.
Our dates are brief, and therefore we admire
What thou dost foist upon us that is old;
And rather make them born to our desire
Than think that we before have heard them told.
Thy registers and thee I both defy,
Not wondering at the present nor the past,
For thy records and what we see doth lie,
Made more or less by thy continual haste.
This I do vow and this shall ever be;
I will be true despite thy scythe and thee.

समय हाँको न इतनी डींग, 'मैं सब कुछ बदल दूँगा'
उठा डालो पिरॅमिड क्यों न नूतन शक्ति से अपनी,
नया मेरे लिये कुछ भी विलक्षण यह नहीं होगा
नयी कलई महज है यह पुरानी वस्तु पर जितनी
हमारे दिन गिने हैं, इसलिये तारीफ हम करते
दिखाते वस्तु जो हमको, सभी जानी पुरानी है
हमारी कामना में तुम उन्हें फिर जन्म दे देते
समझते हो, कहेंगे हम कि यह नूतन कहानी है,
तुम्हारी पोथियों को औ' तुम्हें इनकार हम करते
न हम हैरान बीती पर, न उसपर जो उपस्थित है,
तुम्हारी पोथियाँ औ कारनामों झूठ हैं कहते
तुम्हारी शीघ्रता में की गयी सारी परिस्थिति है,

शपथ पूर्वक कहूँ ऐसे रहूँगा जन्म-जन्मान्तर
लिये होसिया रहो तत्पर, चलूँगा सत्य के पथ पर !





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-CXXIV

If my dear love

If my dear love were but the child of state,
It might for Fortune's bastard be unfathered,
As subject to Time's love or to Time's hate,
Weeds among weeds, or flowers with flowers gathered.
No, it was builded far from accident;
It suffers not in smiling pomp, nor falls
Under the blow of thrall'd discontent,
Whereto th' inviting time our fashion calls:
It fears not policy, that heretic,
Which works on leases of short-number'd hours,
But all alone stands hugely politic,
That it nor grows with heat, nor drowns with showers.
To this I witness call the fools of time,
Which die for goodness, who have lived for crime.

किसी साम्राज्य का अभिजात होता प्यार यदि मेरा
पिता अज्ञात वह सन्तान होती 'भाग्य' की ऐसी,
समय के प्यार और उसकी धृणा का हो पड़ा घेरा
कभी वह फूल के जैसा, कभी वह घास की जैसी,
हमारा प्यार आकस्मिक नहीं, अति दूर है इससे
न पीड़ित हो सजी मुस्कान से, होती नहीं अवनति,
न बुझते हैं निराशा, क्षोभ के कण्टक कहीं इसमें
समय का लोभ भड़कीला जहाँ दिन-रात आकर्षित,
कभी उन नीतियों से भय न खाता, हैं विचैली जो
क्षणिक आवेश में कुछ काल तक हलचल मचाती हैं,
अकेले पूर्ण व्यापक नीति के विस्तार में जो हो
न गरमी से गरम होता, दुबा वर्षा न पाती है,

उन्हें हम जानते हैं जो समय की वारुणी पीते
भलाई के लिए मरते, रहे अपराध में जीते !

Sonnet-CXXVIII

How oft when

How oft when thou, my music, music play'st,
Upon that blessed wood whose motion sounds
With thy sweet fingers when thou gently sway'st
The wiry concord that mine ear confounds,
Do I envy those jacks that nimble leap,
To kiss the tender inward of thy hand,
Whilst my poor lips which should that harvest reap,
At the wood's boldness by thee blushing stand!
To be so tickled, they would change their state
And situation with those dancing chips,
O'er whom thy fingers walk with gentle gait,
Making dead wood more bless'd than living lips.
Since saucy jacks so happy are in this,
Give them thy fingers, me thy lips to kiss.

स्वयं संगीत सी तुम हे प्रिये ! जब छेड़ती वीणा
मृदुल सौभाग्यशाली तार पर जिनकी ध्वनित गति है,
उँगलियों फेरती, उनको मिले सुस्पर्श मधु भीना
सजीले तार के स्वर किन्तु मेरे कर्ण बाधित हैं,
कुटिल ये तार इनकी स्फूर्ति से शायद मुझे ईर्ष्या
उँगलियों का मधुर रस-पान कितने शौक से करते,
अधर मेरे जिन्हें या चाहिए करना मधुर वर्षा
निरखकर तार की निर्भीकता, संकोच से मरते,
करूँ यदि छेड़खानी तार दोगे गति बदल सत्वर
उछलती नाचती ये सूरतें पड़ जायेंगी काली,
धिरकती हैं मृदुलता से तुम्हारी उँगलियाँ जिन पर
सरस ये होंठ ताके, वीन जड़, रस लूटने वाली,

सुखी हो तार दीवाने, मुझे इसका न कोई दुःख
इन्हें सुस्पर्श दो, मेरे अधर को चुम्बनों का सुख !





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-CXXXI

Thou art as tyrannous

Thou art as tyrannous, so as thou art,
As those whose beauties proudly make them cruel;
For well thou know'st to my dear dotting heart
Thou art the fairest and most precious jewel.
Yet, in good faith, some say that thee behold,
Thy face hath not the power to make love groan;
To say they err I dare not be so bold,
Although I swear it to myself alone.
And to be sure that is not false I swear,
A thousand groans, but thinking on thy face,
One on another's neck, do witness bear
Thy black is fairest in my judgment's place.
In nothing art thou black save in thy deeds,
And thence this slander, as I think, proceeds.

प्रिये, उतनी निटुर तुम हो कि जितनी खूबसूरत हो
उन्हीं की भाँति जिनकी है बनाती क्रूर सुन्दरता,
हमारे प्रेम दीवाने हृदय से पूर्ण परिचित हो
रतन हो कीमती, तुममें भरा रस-रंग मादकता,
मगर कुछ लोग जो देखें तुम्हें सच भाव से कहते
न इतनी खूबसूरत तुम कि तड़पन प्यार में आये,
कहें जो लोग भ्रम में हैं उन्हें हम यह न कह सकते
यद्यपि यह तथ्य अपने आप पर ही सत्य घट जाये,
न इसमें झूठ भी कोई अगर यह भाव है तेरा
हजारों तड़पने हैं जो गवाही दे रहीं क्रम से,
समझकर वृझकर कितना मधुर प्रिय रूप है तेरा
'तुम्हारा जुल्म सबसे खूबसूरत' - यह कहें हमसे,

सिवा निज कारनामों के कहीं काली नहीं हो तुम
इसी से हो रही बदनाम तू, ऐसा समझते हम !

Sonnet-CXXXVIII

When my love swears

When my love swears that she is made of truth,
I do believe her though I know she lies,
That she might think me some untutored youth,
Unlearned in the world's false subtleties.
Thus vainly thinking that she thinks me young,
Although she knows my days are past the best,
Simply I credit her false-speaking tongue:
On both sides thus is simple truth suppressed:
But wherefore says she not she is unjust?
And wherefore say not I that I am old?
O! love's best habit is in seeming trust,
And age in love, loves not to have years told:
Therefore I lie with her, and she with me,
And in our faults by lies we flattered be.

हमारी प्रेमिका जब यह कहे वह सत्य का पुतला
करें विश्वास यद्यपि जानते वह झूठ कहती है,
न जिसको ज्ञान कुछ भी है जगत की सूक्ष्मताओं का
हमें अनुभवरहित कच्ची उमर का वह समझती है,
पढ़ा इस व्यर्थ उलझन में कि वह हमको युवक माने
यद्यपि जाने कि मेरा अनुभवों में ही समय बीता,
उसे मैं भी यही कहता, असल क्या ! तू नहीं जाने
अरे, इस भाँति दोनों पक्ष में जो तथ्य, दब जाता,
मगर वह क्यों न यह कहती कि झूठी बात है मेरी
इधर हम भी न क्यों लें मान जैसे हम स्याने हों,
करें विश्वास बाहर से, प्रकृति है प्यार यह तेरी
न होती प्यार की कोई उमर यों दिन गिनाने को,

इसी से वह हमें औ' हम उसे झूठा बताते हैं
असत्यों से गढ़े भ्रम में सदा आनन्द पाते हैं !





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-CXXXIX

O! call not me to justify

O! call not me to justify the wrong

That thy unkindness lays upon my heart;

Wound me not with thine eye, but with thy tongue:

Use power with power, and slay me not by art,

Tell me thou lov'st elsewhere; but in my sight,

Dear heart, forbear to glance thine eye aside:

What need'st thou wound with cunning, when thy might

Is more than my o'erpressed defence can bide?

Let me excuse thee: ah! my love well knows

Her pretty looks have been mine enemies;

And therefore from my face she turns my foes,

That they elsewhere might dart their injuries:

Yet do not so; but since I am near slain,

Kill me outright with looks, and rid my pain.

पुकारो मत मुझे जो बात है बिगड़ी बनाने को
हृदय को सालती मेरे, तुम्हारी झूर निटुराई,
नजर से मत करो घायल, जहाँ काफी मिटाने को
लगाओ शक्ति से ही शक्ति, चितवन, की न प्रभुताई,
न मुझको दुख, कहो खुलकर, किसी से प्यार है तुमको
हमारी आँख से प्रिय आँख अपनी फेर मत लेना,
जरूरत क्या कि तुम अन्दाज से हो बेधती मुझको
तुम्हारी शक्ति अद्भुत है, मुझे सीधे मिटा देना,
अहा निर्दोष प्रियतम प्राण, कितना शीघ्र लख जाती
हमारे शत्रु घातक हैं तुम्हारी मद भरी चितवन,
इसी से दृष्टि से मेरी स्वयं इनको हटा लेती
कि जाकर अन्य स्थानों पर करें ये वार, तीखे व्रण,

मगर ऐसा न करना, प्यार, लगभग मर चुका हूँ अब
निगाहों से मुझे दो मार पीड़ाएँ मिटा दो सब !

Sonnet-CXLVII

My love is as a fever

My love is as a fever longing still,

For that which longer nurseth the disease;

Feeding on that which doth preserve the ill,

The uncertain sickly appetite to please.

My reason, the physician to my love,

Angry that his prescriptions are not kept,

Hath left me, and I desperate now approve

Desire is death, which physic did except.

Past cure I am, now Reason is past care,

And frantic-mad with evermore unrest;

My thoughts and my discourse as madmen's are,

At random from the truth vainly expressed;

For I have sworn thee fair, and thought thee bright,

Who art as black as hell, as dark as night.

हमारा प्रेम है ज्वर, चाहता उपचार वह ऐसा
कि होता ही रहे, इस रोग का उपचार अधिकाधिक,
मिले वह पथ जिससे रोग की हो पूर्णतः रक्षा
रहे जिससे अनिश्चित और रोगी भूख भी प्रमुदित
हमारा तर्क जो इस प्यार का बनता मसीहा है
बड़ा नाराज, नुस्खे पर अमल होता नहीं मेरे,
दिया यूँ छोड़ मुझको अब बड़ी गहरी निराशा है
यही तो मृत्यु इच्छाएँ, न जिसको देह चाहे रे,
नहीं है साध्य मेरा रोग बाहर तर्क, चिन्ता से
बहुत बेचैन अति विक्षिप्त पहले से कहीं हूँ मैं,
सभी व्यवहार बात-विचार मेरे पागलों जैसे
निरर्थक अप्रासंगिक तथ्य यद्यपि बक रहा हूँ मैं,

तुम्हें कारण, परम सुन्दर समुज्ज्वल है सदा माना
मगर तुम नर्क सी काली, अधिरी रात सी, जाना !





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-CXLVIII

O me! what eyes hath Love

O me! what eyes hath Love put in my head,
Which have no correspondence with true sight;
Or, if they have, where is my judgment fled,
That censures falsely what they see aright?
If that be fair whereon my false eyes dote,
What means the world to say it is not so?
If it be not, then love doth well denote
Love's eye is not so true as all men's: no,
How can it? O! how can Love's eye be true,
That is so vexed with watching and with tears?
No marvel then, though I mistake my view;
The sun itself sees not, till heaven clears.
O cunning Love! with tears thou keep'st me blind,
Lest eyes well-seeing thy foul faults should find.

पवित्राये प्यार ने कैसे नयन मस्तिष्क में मेरे
जिन्हें जो वस्तुएँ सच्ची दिखाई ही नहीं देती,
अगर वे देखती भी हैं, समझ देती किधर फेंके
कि देखे सत्य को वह झूठ के ही रूप में लेती,
नयन झूठे निहारें प्रेम से जो, यदि वही सुन्दर
कहो, क्या अर्थ जब दुनिया इसे इनकार करती है,
अगर ऐसा न मानें, प्यार ही तब रंग देवे भर
न प्रेमी दृष्टि दुनियाँ की 'नहीं' सा सत्य होती है,
अरे सच, प्रेमियों की दृष्टि कैसे सत्य हो पाये
प्रतीक्षा और आँसू ही भरे हों जब सदा इनमें,
न कुछ आश्चर्य यदि मेरे नयन से भूल हो जाये
न हो संकेत देवी तो न होगी दृष्टि सूरज में,

चतुर ऐ प्रेम, आँसू से हमें अन्धा बनाते हो
सधी आँखें न पायें देख दुर्गुण हैं तुम्हारे जो !

Sonnet-CXLIX

Canst thou, O cruel! say

Canst thou, O cruel! say I love thee not,
When I against myself with thee partake?
Do I not think on thee, when I forgot
Am of my self, all tyrant, for thy sake?
Who hateth thee that I do call my friend,
On whom frown'st thou that I do fawn upon,
Nay, if thou lour'st on me, do I not spend
Revenge upon myself with present moan?
What merit do I in my self respect,
That is so proud thy service to despise,
When all my best doth worship thy defect,
Commanded by the motion of thine eyes?
But, love, hate on, for now I know thy mind,
Those that can see thou lov'st, and I am blind.

अरी निष्ठुर, 'न दूँगी प्यार', यह भी क्यों न कह देती
स्वयं से हारकर जब मैं तुम्हारे साथ हूँ चलता,
भुला दूँ आप अपने को, न क्या तब ध्यान में होती
तुम्हारे प्यार के प्रति, आह ! अत्याचार यों करता,
किसे मैं हूँ बनाता मित्र, जिससे है घृणा तुमको
भृकुटि टेढ़ी करो जिस पर, किसे मैं चाहता दिल से,
न क्या प्रतिकार करता जब बनाती हीन तुम मुझको
तड़पता क्या न भरता आह, इस बेदर्द महफिल में !
अरे, क्या पात्रता मेरी कि ऐसे भाव मेरे प्रति
मुझे आने न देती हो कभी उर द्वार पर अपने,
तुम्हारे दोष को भी जब करूँ श्रद्धा-सुमन अर्पित
नयन संकेत पर दूँ वार अपने प्राण के सपने,

घृणा करते चलें प्यारे, नियति हूँ जानता तेरी
उन्हें चाहो जिन्हें है आँख, अन्धी आँख है मेरी !





शेक्सपियर के सानेदस का हिन्दी पद्यानुवाद-मोती बी.ए.



Sonnet-CLIV

The little Love-god

The little Love-god lying once asleep,
Laid by his side his heart-inflaming brand,
Whilst many nymphs that vowed chaste life to keep
Came tripping by; but in her maiden hand
The fairest votary took up that fire
Which many legions of true hearts had warmed;
And so the General of hot desire
Was, sleeping, by a virgin hand disarmed.
This brand she quenched in a cool well by,
Which from Love's fire took heat perpetual,
Growing a bath and healthful remedy,
For men diseased; but I, my mistress' thrall,
Came there for cure and this by that I prove,
Love's fire heats water, water cools not love.

पुरानी बात है जब प्रेम का लघु देव था सोया
जलाये जो हृदय को अधजली समिधा बगल में ले,
उतर आयी छमा-छम-छम वहाँ कुछ रूप की परियाँ
'रहेंगी सत्य जीवनभर' शपथ लेकर कहा सबने,
प्रतिज्ञाबद्ध सुन्दरतम कुमारी ने लिया ज्वाला
असंख्यक सत्य हृदयों की भरी जिसमें रही उष्मा,
जहाँ अति तप्त इच्छा का बली कप्तान मतवाला
कुमारी के सहारे सो रहा था त्याग सब गरिमा,
किसी निकटस्थ वापी से किया इस आग को शीतल
मिली जिसको चिरन्तन दाह तत्क्षण प्रेम-ज्वाला से,
कराता स्नान, रखता स्वस्थ, जीवन के लिए निर्मल
भगर हमको हमारी स्वामिनी को वेध डाला है,

वहाँ हम जान पाये वह, जहाँ उपचार को आये
बना दे उष्ण जल को प्यार, जल शीतल न कर पाये।

